चन्दामामा
जनवरी १९९६
Rs 5

माताओ
पोलियो का उन्मूलन आप के बस की बात है

९ दिसम्बर और २० जनवरी के दिनांक राष्ट्रीय पोलियो निरोधक दिनों के रूप में घोषित हैं।

आपने पहले ही अपनी सन्तान को टीका की दवाई दी होगी, पर संरक्षा की दृष्टि से दुबारा पास के पोलियो निरोधक कैम्प में ९ दिसम्बर व २० जनवरी के दिन । तीन साल के अन्दर के बच्चों को टीका की दवाई दीजियेगा ।

स्वस्थ बच्चों का भविष्य अपने ही देश का भविष्य है

ईसवी २००० तक पोलियो रहित भारत के निर्माण में सहर्ष योगदान देंगे

PolioPlus

दिसम्बर ९, १९९५
जनवरी २०, १९९६
दिनांक

याद रखियेगा। ये दिन आपके बच्चों की संरक्षा के दिन हैं।

ANNOUNCING THE

The first six books, splendid in their content, press, marking the Golden Jubilee of Chanda
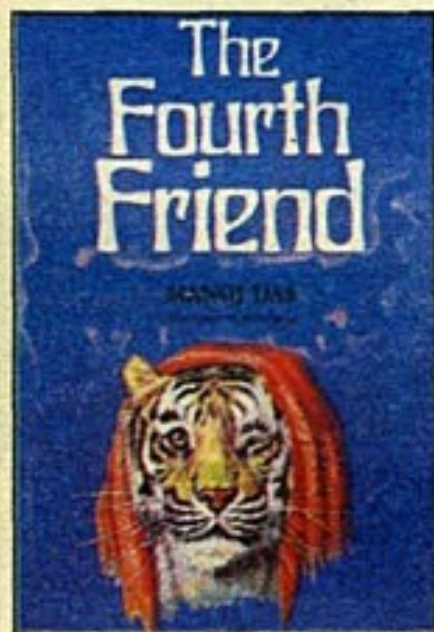
A novelette on three lads befriending an unusual stranger – and their strange adventure, in a village turned into an island by flood.
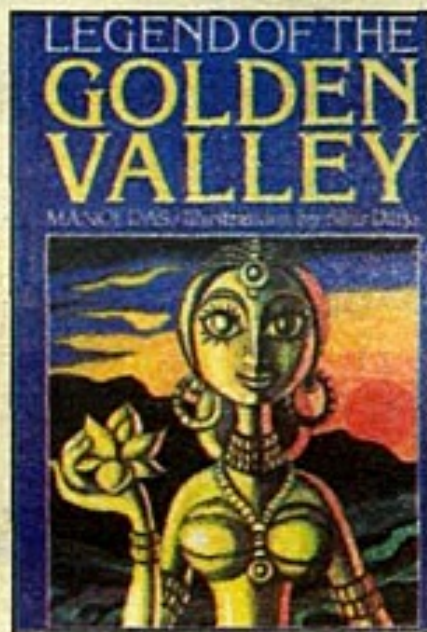
A fairytale novella opening up into fascinating worlds and introducing gripping characters – rich with 42 imaginative illustrations.
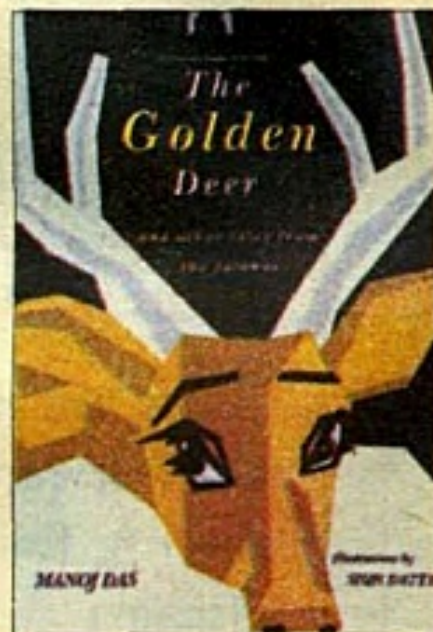
A second selection of stories from the immortal Jatakas, unforgettable for their moral, wit, and wisdom.

How to get the books at an easy price.

If you are a subscriber to Chandamama (in any language) between the ages of 6 and 16, you are eligible to the membership of the Chandamama Young Scholars' Club. If you subscribe to Chandamama (in any language) before May 1996, the offer is open to you. You can fill up the form given here on the right side and mail it to us, while sending a token fee of Rs. 50. either by M.O. or by a bank draft drawn in the name of CHANDAMAMA YOUNG SCHOLARS' CLUB. You can then order all or any number of these books at much less than their original price. You get a handy gift of a School Companion Note Book and a decent badge.
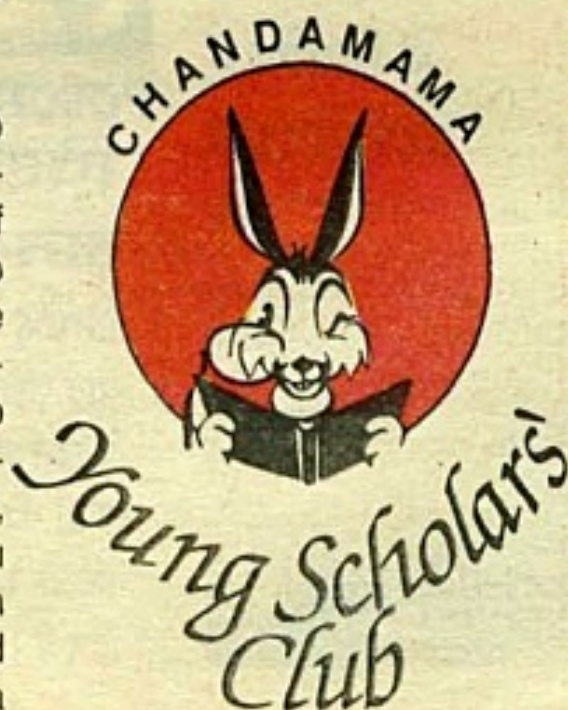
What is more, you can participate in talent contests and different activities which the Club proposes to hold in the future.

CHANDAMAMA BOOKS

illustrations and production–are soon to roll out of the
mama. Written by: Manoj Das, Illustrated by Sisir Datta

A selection of legends and parables, some of which are believed to have been narrated by the Buddha, their radiance even now undiminished.
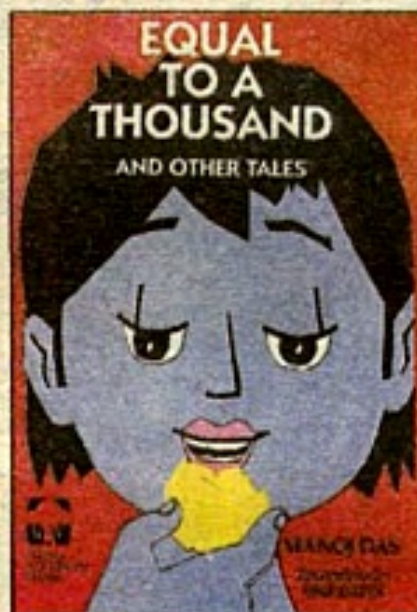
A garland of gems from the great treasure of India's folklore and ancient fiction. Each story has a message, as relevant today as it was ever before.
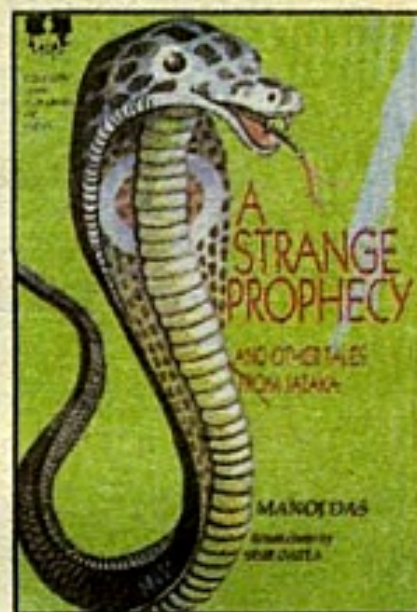
An invitation into the delightful world of ancient tales, legends and parables. Each story enriches us with prudence and helps us understand life better.

MEMBERSHIP FORMALITIES WILL BE PROCESSED ONLY BY END OF FEBRUARY 1996.

MEMBERSHIP CARD

BADGE

School Companion Note Book

NOTE BOOK

Dear Sir,

Please enrol me a member of the Chandamama Young Scholars' Club.

My Chandamama subscription No. is ....

I am sending my Membership fee of Rs. .... by M.O./Draft.

I look forward to my acceptance - gift.

Full Name : .... Signature

Name of Parents : ....

Mailing Address : ....

Permanent Address : ....

Date of Birth : ....

Class : .... School ....
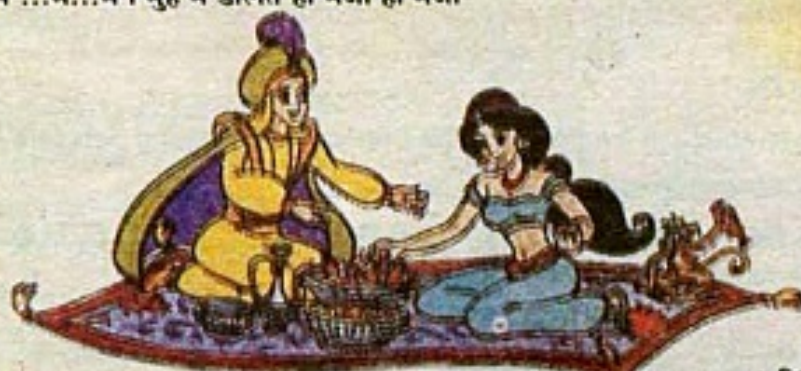
चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

एक और शताब्दी के पहले

एक और नव वर्ष नहीं, बल्कि एक और नयी शताब्दी के बारे में हम ज़रा सोचें-विचारें। चार वर्षों के बाद संसार बीसवीं सदी को बिदा करेगा और इक्कीसवीं सदी में क़दम रखेगा। ऐसे तो बीसवीं शताब्दी के पूरे होने में अभी चार साल बाक़ी हैं, फिर भी लोग नयी शताब्दी का आह्वान करने की तैयारी में लगे हैं। उनकी आशाएँ है कि दिसंबर, ३१, १९९९ के बाद उन्हें सुख-शांति अधिक मात्रा में उपलब्ध होंगीं।

बीसवीं शताब्दी ने दो विश्व-युद्ध देखे। उन्हें विश्व-युद्ध इसलिए कहा गया कि इन युद्धों में दुनिया के सभी देशों ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से भाग लिया।

जब प्रथम विश्व-युद्ध छिड़ा, तब हमारा देश ब्रिटिश शासन के अधीन था। हमने भी अपने देश की सेना को युद्ध-स्थल पर भेजा। युद्ध में प्राणहानि सहज बात है। द्वितीय विश्व-युद्ध में भी हमारे कितने ही सिपाही अंग्रेज़ों के लिए मरे।

इस दौरान देश की जनता स्वतंत्रता के लिए अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ती रही। इस शताब्दी के आरंभ से ही स्वतंत्रता के समर्थन में भारत की जनता अंग्रेज़ों के खिलाफ़ लड़ती रही। गांधीजी के नेतृत्व में इस आँदोलन ने ज़ोर पकड़ा। हम सब जानते ही हैं कि स्वतंत्रता के युद्ध में क्या-क्या हुआ।

अर्ध शताब्दी पूर्व हम स्वतंत्र हुए। इन पचास सालों के अंदर, हमने प्रजातंत्र-पद्धति में रहने की आदत डाली और हम चाहते भी यही थे। यह तो निर्विवाद सत्य है कि भारत सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। इतने सालों के बाद भी एक तिहाई आबादी दरिद्र स्थिति में है। आधी आबादी से अधिक निरक्षर है। क्या नयी शताब्दी इस दरिद्रता और निरक्षरता का निर्मूलन करने में सफल होगी? शेष चार सालों में भी हम इस दिशा में अपने प्रयत्न ज़ारी रखें और सफलता के शिखर तक पहुँचें।

वर्ष : ४९ | जनवरी १९९६ | अंक : ५

एक प्रति : रु. ५/- | वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

कभी न हम भूलें जी... जीते जी

जीने की राह यही है सही

जीवन की इन राहों में हर कदम है इम्तिहान, किन राहों को अपनाएंगे, किन से मुंह मोड़ेंगे, यही हमारी पहचान. बिना चाह के, बिना आस के, किसी का हाथ बंटाना, यूं ही राह चलते, किसी के काम आना. इसी को कहते सच्चाई से जीना. कभी न हम भूलें जी . . . जीते-जी, जीने की राह यही है सही.

बरसों से भारत के सबसे ज्यादा चाहे जानेवाले बिस्किट. • स्वादभरे, सच्ची शक्तिभरे

everest/95/PPL/109hn

समाचार - विशेषताएँ

संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वर्णोत्सव

संयुक्त राष्ट्र संघ का कार्यालय न्यूयार्क में है। पिछले अक्तूबर महीने में संघ के स्वर्णोत्सव बहुत बड़े पैमाने पर संपन्न हुए। पचास वर्ष संपूर्ण संघ के इन स्वर्णोत्सवों में लगभग १२० देशों ने भाग लिया, जिसमें अनेकों देशों के प्रधान मंत्री, अध्यक्ष तथा सरकारी प्रमुख शामिल हुए।

अक्तूबर, २२ को अमेरीकी अध्यक्ष बिल क्लिंटन, रूस के अध्यक्ष बोरिस एलस्टिन, क्यूबा के अध्यक्ष फीडेल क्रास्ट्रो, पालस्तीन के नेता यासर अराफ़त आदि ने भाग लिया और अपने-अपने विचार व्यक्त किये। २३ को फ्रांस के अध्यक्ष जाकस चिराक, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री जान मेजर ने भाषण दिया। हमारे देश के प्रधान मंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव ने तीसरे दिन भाषण दिया। राष्ट्र संघ को संबोधित करते हुए कुल मिलाकर १८५ वक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। हर एक प्रमुख वक्ता को पाँच मिनिट का समय दिया गया।

१९१४-१८ में, जो विश्व-युद्ध समाप्त हुआ, उसके बाद उस समय के विभिन्न राष्ट्रों के नेताओं ने मिल-जुलकर विश्व के देशों का एक सम्मेलन स्थापित किया। उसका लक्ष्य था कि ऐसा विश्व-युद्ध पुनः छिड़ ना जाए। पर उनका लक्ष्य सफल नहीं हो पाया। १९३९ में द्वितीय युद्ध प्रारंभ हुआ।

पाँच वर्षों तक चले इस युद्ध ने लाखों आदमियों की बलि ली। ऐसी भयंकर स्थिति फिर से उत्पन्न ना हो, अगली पीढ़ियों की ऐसे युद्धों से रक्षा हो, इसी उन्नत लक्ष्य को लेकर १९४५, जून, २६ को संयुक्त राष्ट्र संघ का आविर्भाव हुआ। शानफ्रांसिस्को में संपन्न प्रथम समावेश में पचास देशों के नेताओं ने भाग लिया और यु.एन.चार्टर में हस्ताक्षर किया। हस्ताक्षर करनेवाले देशों में से हमारा भी देश एक है। स्वीडन के डिक्लिी संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रथम सचिव निर्वाचित हुए।

संसार में कहीं-कहीं, मुख्यतथा वियतनाम, कंबोडिया, कोरिया, युगोस्लाविया, पालीस्तीन, अरेबिया सिंधु शाखा आदि प्रदेशों में युद्ध होते रहे, फिर भी कहा जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ अपने लक्ष्य की पूर्ति में सफल होता आया; अपने अस्तित्व को बनाये रखा।

संघ का लक्ष्य केवल राजनैतिक समस्याओं का परिष्कार करना मात्र नहीं था। वह विविध समस्याओं के परिष्कार में जुट गया। उसने संयुक्त राष्ट्र संघ शिशु-निधि (यू.एन.सिफ) विद्या, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक (युएनस्को) संसार आरोग्य संस्था, अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संस्था, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय आदि कितनी ही संस्थाओं की स्थापना की, जो संयुक्त राष्ट्र संघ के लक्ष्य की पूर्ति में सहायक बने। इन विभिन्न क्षेत्रों में ये संस्थाएँ अपना योगदान पहुँचा रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वितीय प्रधान सचिव हेमार्क जोल्ड ने कहा "संयुक्त राष्ट्र संघ का आविर्भाव हमें स्वर्ग ले जाने के लिए नहीं, बल्कि नरक जाने से बचाने के लिए हुआ है।" उस समय के सचिव बुट्रोस घाली ने स्वर्णोत्सवों में भाग लेने पधारे संसार के उच्च नेताओं को संबोधित करते हुए कहा "आप लोगों को अपने ही घर आह्वान दे रहा हूँ। शांति की स्थापना के प्रयत्नों में जुटी विश्व की प्रजा के मंच पर आप लोगों का स्वागत कर रहा हूँ।"

संयुक्त राष्ट्र संघ के ऐसे महोत्सव तथा उदात्त लक्ष्य सफल हों, इसकेलिए युवा नेताओं का सहयोग नितांत आवश्यक है। इससे विश्व में शांति स्थापित होगी। सब राष्ट्रों का सर्वतोमुखी विकास होगा।

बाघ की करायी शादी

शशिधर मणिपुर का राजा था। आखेट उसका छठवाँ प्राण था। मनोरंजन के लिए सप्ताह में एक बार आखेट करने जाया करता था।

एक दिन कुछ सिपाहियों को लेकर, रथ में आसीन होकर जंगल की तरफ़ निकल पड़ा। दुपहर तक कुछ हिरणों व जंगली सुवरों का शिकार किया। इसके बाद सपरिवार वह एक पाकर पेड़ के तले विश्राम करने आया। वहाँ पहुँचने के बाद सबने मिलकर खाना खाया और विश्राम किया।

शशिधर जब खाकर पेड़ के तले विश्राम करने लगा तब अचानक एक बाघनी उसपर टूट पड़ी। यह देखकर वहाँ उपस्थित सब के सब घबरा गये। चिल्लाने लगे। किन्तु शशिधर ने बिजली की चकाचौंध की तरह बड़े ही वेग से बग़ल में रखी हुई ढ़ाल को अपने बायें हाथ में लिया। बाघनी के आक्रमण से अपने को बचा लिया। बाघनी गरजती हुई अपने पिछले पैरों पर खड़ी हो गयी। वह शशिधर पर टूट पड़ने ही वाली थी कि इतने में उसने म्यान से तलवार निकाली और देखते-देखते बाघनी के सिर को काट डाला।

राजा के साहस की प्रशंसा सबने मन ही मन की। सब लोग प्राणहीन बाघनी के चारों ओर घिरकर खड़े होने लगे कि इतने में झुरमुटों में से हलचल सुनायी पड़ी।

बाघनी के रक्त से सिक्त तलवार को अपने हाथ में लिये राजा बड़ी ही सावधानी से उन्हीं झुरमुटों की तरफ़ ध्यान से देखने लगा। इतने में बाघनी का बच्चा बाहर आया और सिपाहियों की ओर देखकर धीरे से गरजने लगा। उसके जन्मे एक महीना भी नहीं हुआ होगा।

फिर मरी बाघनी के चारों ओर घूमता हुआ कराहने लगा। उसकी इस दयनीय

आनंद पारीख

स्थिति को देखकर शशिधर का मन दया से पिघल गया। वह उसके पीछे चुपके से गया और उसे पकड़ लिया। वह नाराज़ हो अपने छोटे पंजे से शशिधर के हाथों को घायल करने लगा।

शशिधर उसपर दया दिखाते हुए बोला, "शांत हो जा। अपनी रक्षा के लिए मुझे तुम्हारी माँ को मारना पड़ा।"

और शिकार ना करने का फ़ैसला करके राजा क़िले में आ गया। रानी गिरिजादेवी ने बाघनी के बच्चे को देखकर कहा, "प्रभू वह कितनी भी कम उम्र का क्यों ना हो, आख़िर है क्रूर जंतु। बड़े होने पर यह ख़तरनाक साबित हो सकता है। कहीं जान-बूझकर हम आफ़त मोल तो नहीं ले रहे हैं ?"

लंबी साँस खींचते हुए शशिधर ने कहा "इसकी माँ नहीं रही। अपने हाथों उसे मैंने मारा है। इसे पालने के लिए ही यहाँ ले आया। मेरा विश्वास है कि बचपन से ही मनुष्यों के बीच में रहते-रहते इसके स्वभाव में परिवर्तन होगा, इसकी क्रूरता लुप्त हो जायेगी। अगर ऐसा नहीं हुआ तो इसे जंगल में छोड़ देंगे।"

उस दिन से लेकर राजा स्वयं उसे दूध पिलाता रहा। महीने भर में वह पालतू जंतु की तरह बरताव करने लगा। अंत:पुर में बिल्ली की तरह वह घूम-फिरने लगा। रानी

की गोद में ही सोने लगा।

एक साल के अंदर ही वह बड़ा हो गया। वह अब बच्चा नहीं रहा। पीले रंग के उसके बदन पर काली लक़ीरें आ गयीं। मांस खाने लगा। किन्तु, आदमियों को या अंत:पुर के किसी भी प्राणी को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाता था।

बाघ की पीठ पर व्रण उभर आया। सप्ताह भर में वह व्रण हथेली भर का हो गया। पशुवैद्य ने उसकी जाँच की और कहा "प्रभू, जंतु अक्सर ऐसे व्रण के शिकार होते हैं। साधारण औषधियों से यह चंगा नहीं हो सकता। इसके लिए एक लेपन की ज़रूरत है। यह लेपन बारह ज़ड़ी-बूटियों से बनता

है । किन्तु इनमें से एक जड़ी-बूटी मेरे पास नहीं है । उसका नाम है सिंधूर सुधा पुष्प । इस पुष्प का रंग पीला होता है । इसका पौधा एक गज की लंबाई का होता है । साल में एक ही बार इस पौधे में फूल विकसित होता है । मैंने सुना है कि यह पौधा रत्नपुरी के महाराजा आनंदवर्धन के उद्यानवन में है ।''

आनंदवर्धन का नाम सुनते ही राजा का चेहरा एकदम लाल हो गया । लगभग बीस साल पहले घटित एक घटना उसे याद आयी ।

उन दिनों कांचनपुरी की युवरानी मदनमंजरी के स्वयंवर की तैयारियाँ हो रही थीं । उसका पिता था भूपाल वर्मा । मदनमंजरी के अपूर्व सौंदर्य के बारे में बहुत से राजकुमारों ने सुन रखा था । हर राजकुमार इसी आशा को लेकर स्वयंवर में उपस्थित हुआ कि मदनमंजरी वरमाला शायद उसके गले में डाल दे । राजा शशिधर भी उस स्वयंवर में आया । वह पहले से ही विवाहित था ।

मदनमंजरी के स्वयंवर के पीछे एक रहस्य था । रत्नपुरी के राजा आनंदवर्धन और मदनमंजरी एक दोनों को चाहते थे । परस्पर उनमें प्रेम था किन्तु स्वयंवर वंश का आचार था, इसलिए केवल दिखावे के लिए इसका आयोजन किया उसके पिता ने ।

इस कारण मदनमंजरी ने स्वयंवर-सभा में उपस्थित किसी राजकुमार की ओर देखा तक नहीं । वह सीधे आनंदवर्धन के पास गयी और उसके गले में वरमाला पहनायी ।

उस समय शशिधर, आनंदवर्धन के बग़ल में बैठा हुआ था । आनंदवर्धन ने उसकी ओर तिरछी नज़र से देखा और अपनी मूँछ पर ताव देते हुए व्यंग-भरे स्वर में कहा ''देखी, स्वयंवर की स्पर्धा में मेरी विजय ।''

वैसे ही शशिधर को इसका दुख था कि मदनमंजरी ने उसे नहीं चाहा, इसपर उसकी इन बातों ने उसके घाव पर नमक छिड़क दिया ।

मणिपुरी और रत्नगिरी पड़ोसी देश थे । सहज ही सरहदों को लेकर दोनों में झगड़े होते थे । इस वजह से उन दोनों में शत्रुता

की भावना भरी हुई थी। इस स्वयंवर से एक राजा संतुष्ट था तो दूसरा राजा ईर्ष्या से जल रहा था।

इस पृष्ठभूमि में आनंदवर्धन ने मूँछ पर ताव देते हुए उक्त बातें की तो शशिधर झट आसन से उतर गया और म्यान से तलवार निकाली। कहा "एक स्त्री से चुने जाने मात्र से अपने को महावीर ना समझो। तुमसे हो सके तो खड्ग-युद्ध में मुझे हरावो।"

आनंदवर्धन भी उसकी बातों से आवेश में आ गया और कहा "केवल खड्ग-युद्ध मात्र करने से क्या लाभ है। इस युद्ध में हम दोनों में से जो जीतेगा, मोती द्वीप उसी का होगा। मेरी शर्त मानते हो तो अभी, इसी वक़्त तुमसे युद्ध करने सन्नद्ध हूँ।"

शशिधर ने शर्त मान ली। उसका दृढ़ विश्वास था कि खड्ग-युद्ध में उसकी बराबरी का कोई है ही नहीं। क्षण भर में स्वयंवर वेदिका समर वेदिका बन गयी।

दोनों बहुत देर तक लड़ते रहे। क्रमशः आनंदवर्धन की शक्ति क्षीण होती गयी। शशिधर ने यह भाँपा और दुगुने उत्साह से तलवार चलाने लगा। इतने में आनंदवर्धन ने प्रत्यर्थी के आक्रमण से अपने को बचा लिया। फलस्वरूप शशिधर के दायें हाथ को चोट लगी। तलवार उसके हाथ से गिर गयी।

अपने ही वार से घायल शशिधर को हार
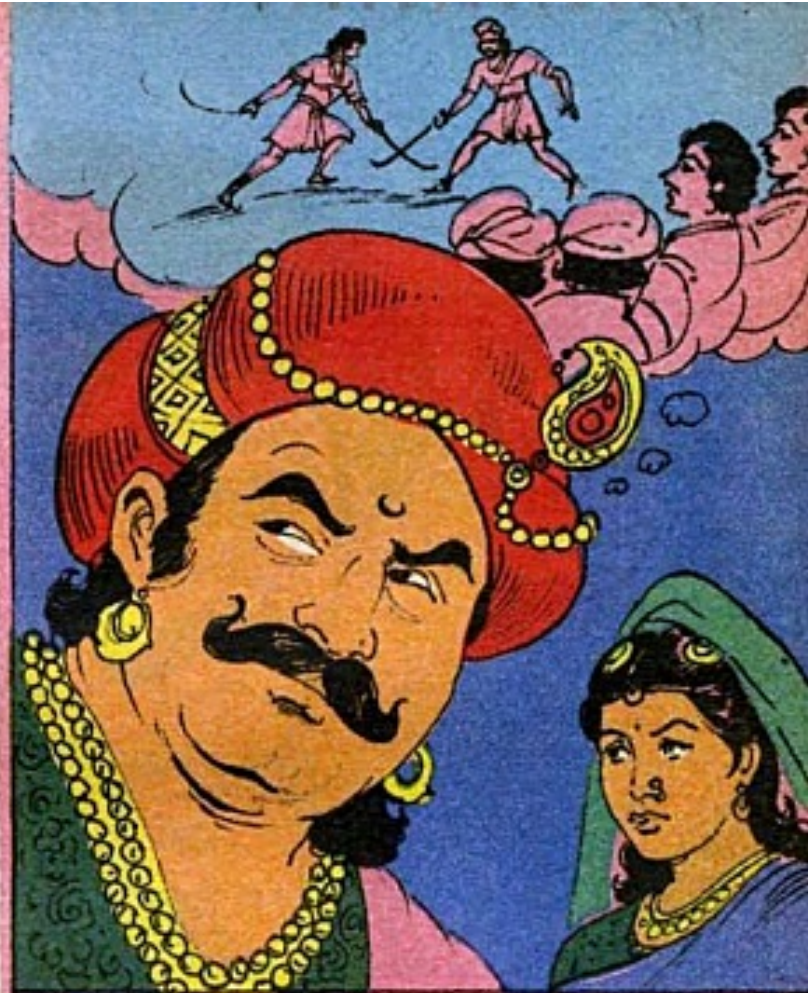
खानी पड़ी। शत्रु के सामर्थ्य के कारण नहीं, बल्कि अपने ही दुर्भाग्य के कारण पराजित शशिधर बहुत ही क्षुब्ध हुआ। उस समय से आनंदवर्धन के प्रति उसमें घृणा-द्वेष कूट-कूटकर भरे हुए थे।

रानी गिरिजादेवी ने भांप लिया कि अपने पति के मन में कैसा संघर्ष चल रहा है। उसने कहा "पतिदेव, यह जिद, हठ, आग्रह का समय नहीं है। आनंदवर्धन के उद्यानवन से किसी प्रकार हमें उस पुष्प को पाना होगा। बाघनी की संतान को बचाना होगा। इसे जीवित रखना हमारा धर्म है। यह हमारे प्रेम की निशानी है।"

पल भर राजा सोच में पड़ गया और फिर कहा,

समझाया-बुझाया।

"तो तुम्हीं बताओ कि बाघ को कैसे बचा पायेंगे।" राजा ने असहनशील हो पूछा।

गिरिजा देवी ने कोमल स्वर में बताया "आप नाराज़ ना हों तो एक बात कहना चाहूँगी। हमारे युवराज दीप्तिशेखर और आनंदवर्धन की पुत्री चंदना एक दूसरे को चाहते हैं। गंभीर परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए मैंने इस सत्य को छिपाया। आप आशीर्वाद दें तो यह कार्य सुलभ होगा।"

शशिधर एकदम नाराज़ होता हुआ बोला "अपने शत्रु से संबंध जोड़ना असंभव है। जब तक मेरी साँस चलेगी, तब तक यह हो ही नहीं सकता।"

रानी ने अपनी हार नहीं मानी। उसने शांत स्वर में पति से कहा "प्रभू, बाघ का निवास स्थल है जंगल। यह क्रूर जंतु है। परंतु मनुष्यों के बीच रहकर यह साधु जंतु हो गया। हमारे बीच में रहकर इसने अपनी प्रवृत्ति बदल ली। जब ऐसे क्रूर जंतु में ऐसा असाधारण परिवर्तन आ सकता है तो क्या यह परिवर्तन हममें संभव नहीं? हम मानव हैं। हममें ज्ञान है, विचक्षण-शक्तिहै, अच्छाई-बुराई का भेद जानते हैं, जानते भी हैं कि पाप और पुण्य क्या है। अलावा इसके, आप राजा हैं, देश और प्रजा के रक्षक हैं। बिना किसी आधार के अकारण दूसरे देश पर आक्रमण करना, वहाँ के लोगों को मारना

"रत्नगिरी पर आक्रमण करके उसपर विजय प्राप्त कर लें और उस पुष्प को पा लें तो।"

"प्रभू, कहा जाता है कि युद्ध में जय-पराजय दैवाधीन हैं। हाँ, समझ लीजिये आपने युद्ध में विजय पा ली। किन्तु कैसे विश्वास करें कि सिंधूर सुधा पुष्प आपके हाथ आयेगा? हो सकता है कि आप पर क्रोधित आनंदवर्धन युद्ध के आरंभ के पूर्व ही उसे जड़ से उखाड़ दे। तब आप क्या कर सकेंगे? अलावा इसके, एक बाघ की रक्षा के लिए दूसरे देश पर आक्रमण करना इतर राजाओं की दृष्टि में हास्यास्पद बात नहीं होगी? इससे आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं" रानी ने अपने पति को

क्या न्यायसंगत है? उनसे स्नेह ना कर पाना क्या हमारी मानवता का लोप नहीं ? इससे क्या हमारी पशु-प्रवृत्ति दृष्टिगोचर नहीं होती ? मेरी बातें आपको कडुवी लगती होंगी। क्षमा कीजिये। आपने जंगल में हमारे पालतू बाघ की माँ को मारा था। इसके लिए क्या यह आपसे बदला लेना चाहता है ? आपको मारना चाहता है? बाघ में जो क्षमा-गुण हैं, वे भी आपमें नहीं रहे। इसका मुझे बड़ा आश्चर्य होता हैं। साथ ही मुझे इसका दुख भी है।''

रानी की बातें शशिधर के दिलोदिमाग़ पर बहुत असर कर गयीं। भाले की तरह चुभीं। उसने तीव्र रूप से सोचना शुरु कर दिया।

थोड़ी देर बाद लंबी साँस खींचता हुआ बोला ''ठीक है। हमसे संबंध जोड़ने में आनंदवर्धन को कोई आपत्ति ना हो तो मैं भी इस विवाह से सहमत हूँ। इसके पहले रत्नपुरी से उस पुष्प को मंगाना होगा और हमारे बाघ की चिकित्सा करानी होगी।'' कहकर उसने रत्नपुरी भेजने के लिए एक दूत को बुलवाया। इतने में रानी ने पशु-वैद्य को इशारा किया, जो द्वार के पीछे खड़ा था। अब वह सामने आ गया और शशिधर से कहा ''राजन्, मैंने आपसे झूठ कहा था। बाघ की चिकित्सा के लिए उस पुष्प की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरे पास जो जड़ी-बूटियाँ हैं, उसी से चिकित्सा कर सकता हूँ। व्रण निकल जायेगा। आपमें परिवर्तन आये, रत्नगिरी व मणिपुरी के पारस्परिक संबंध दृढ़ हों, दोनों देशों की प्रजा सुखी व संपन्न हो, इन्हीं को दृष्टि में रखकर महारानी ने यह योजना बनायी और मैंने उनका साथ देने का दुत्साहस किया। क्षमा कीजिये।''

उसकी बातों पर मंदहास करते हुए शशिधर ने कहा, ''महारानी को जो भेंट देनी है, बाद दूँगा। तुम केवल पशु-वैद्य ही नहीं, बल्कि मानवों में जो पशु-प्रवृत्ति है उसकी भी चिकित्सा करने की अपार शक्ति रखते हो।'' कहते हुए उसने अपने गले का रत्न-हार उसे भेंट में दिया।

नियम

रामशर्मा, नारायण तथा गुरू ने वैद्य-शिक्षा पूरी की। गाँव लौटे और अपना-अपना परिवार बसाया। फिर तीनों मिले। उन्होंने निर्णय लिया कि एक ही जगह पर अस्पताल खोलेंगे और साथ मिलकर काम करेंगे। इससे पारस्परिक स्पर्धा तथा द्वेष की गुंजाइश नहीं होगी। उन्होंने नियम बना लिया कि जो भी इलाज के लिए आयेगा, पहले उसे तीन रुपये देने होंगे।

एक दिन रामशर्मा की पत्नी जानकी अचानक सिर-दर्द से पीडित होने लगी। वह गुरु से जब मिली तो उसने कहा कि रामशर्मा से मिलना चाहती हूँ। सिर दर्द के लिए दवा लेनी है। गुरु ने तक्षण तीन रुपयों की माँग की।

जानकी नाराज़ होती हुई बोली "जानते हो ना, मैं कौन हूँ?" गुरु ने विनयपूर्वक बताया "यह हमारा नियम है।"

जानकी घर लौटी,तीन रुपये ले आयी और गुरू को देकर दवा ली। फिर अपने पति के कमरे में गयी और विषय सविस्तार बताया। फिर उसने अपने पति से कहा "देख लिया ना, मेरे साथ कैसा व्यवहार हुआ? कंजूसी की भी एक हद होती है।"

रामशर्मा हँसता हुआ बोला "इसमें कंजूसी की कोई बात नहीं। जो तीन रुपये मिले हैं, उन्हें हम आपस में बाँट लेते हैं। बिना रुपये लिये तुम्हें दवा दी जाती तो बाकी दोनों को कुछ नहीं मिलेगा। अलावा इसके, वे भी अपनी पत्नियों की चिकित्सा मुफ़्त करें, तो मुझे भी दो रुपये खोने पडेंगे।"

अपने पति की ईमानदारी पर वह बेहद खुश हुई।

- राजा दण्डन

६

(रूपधर, सुकेशिनी के यहाँ उसका अतिथि बनकर रहा। उसके सहयोगियों के दबाव की वजह से स्वदेश निकला। सुकेशिनी की सलाह के मुताबिक़ यमलोक गया। वहाँ उसकी माता की प्रेतात्मा से मिलाप हुआ। उसके द्वारा अपने परिवार की गतिविधियों का विवरण जाना।)   -बाद

रूपधर, जब अपनी माँ से बातें करने में संलग्न था, तब अनेकों और प्रेतात्माएँ बलि स्वीकार करने आयीं। रूपधर ने सबसे बातें की और उनके बारे में जानकारी प्राप्त की। वहाँ जो आयी थीं, उनमें नवद्योत की माँ और भुवनसुँदरी की माँ भी शामिल थीं।

बलियाँ स्वीकार करने के बाद बहुत-सी प्रेतात्माएँ वापस लौट गयीं। इतने में वहाँ राराजा की प्रेतात्मा आयी। बलि स्वीकार करते ही उसने रूपधर को पहचाना। वह ज़ोर से रो पड़ी और रूपधर से हाथ मिलाना चाहा। किन्तु प्रेतात्मा जीवित व्यक्ति से ना ही हाथ मिला पायेगी, ना ही उसे अपने आलिंगन में ले सकेगी।

रूपधर ने विस्मित होकर पूछा "राजन्, आप यहाँ कैसे आये और कब?"

"अजबल नामक एक दुष्ट और मेरी धर्मपत्नी ने मिलकर मुझे मारने का षड्यंत्र

रूपधर ने कहा।

"किन्तु तुम्हारी पत्नी तो पतिव्रता है। तुम्हारा युद्ध के लिए निकलते समय वह नववधु थी। थोड़े महीनों बाद माँ भी बननेवाली थी। उसका बेटा अब तक बड़ा भी हो गया होगा।"

जब वे दोनों बातों में तल्लीन थे, तब वहाँ वज्रकाय और पितृकीर्ति की प्रेतात्माएँ भी आयीं। ट्रोय युद्ध में मरे शेष वीर भी वहाँ आये।

वज्रकाय ने रूपधर को पहचानते ही उससे बातें कीं। अनेकों विषयों पर चर्चा की और पूछा "क्या मेरा बेटा सकुशल है? वह कैसा योद्धा है ?"

"तुम्हारा बेटा नवयोध पराक्रमी है। नवयोध के बाद कोई ऐसा दूसरा योद्धा नहीं, जिसने ऐसे व्यूह की रचना की हो। उसने कितने ही योद्धाओं को बड़ी सुगमता से हराया। काठ के घोड़े में छिपे योद्धाओं में से वह भी एक था। भय उसे छू तक नहीं पाया। तलवार हाथ में लिये तक्षण ही मुझसे रणरंग में कूद पड़ने की अनुमति मांगता रहा। ट्रोय पर पिल पड़ने की उसकी तीव्र आकांक्षा थी। बता नहीं सकता कि युद्ध में कितने लोग मरे और कितने लोग घायल हुए। केवल नवयोध ही एक ऐसा वीर था, जिसके शरीर को कोई चोट नहीं पहुँची।" रूपधर ने बताया।

रचा। उन्होंने अतिथि के रूप में मुझे बुलाया और भोजन करते समय मेरी हत्या कर दी। मेरे साथ-साथ मेरे परिवार को भी मार डाला। तुमने तो युद्ध में अनेकों दारुण हत्याएँ देखी होंगी, किन्तु भोजन के समय इतने लोगों को एक साथ मार डालना तुम्हारी कल्पना के भी बाहर की बात होगी।" राराजा ने रोते हुए कहा।

"हाँ प्रभू, स्त्री की बुद्धि चपल और प्रलायांतक है। युद्ध से लौटने के पहले ही आपकी हत्या की योजना, आपकी पत्नी ने बनायी होगी। स्त्री का विश्वास किया नहीं जा सकता। भुवनसुंदरी को ही लीजिये। उसके लिए कितने ही मरे और मारे गये।"

उसकी बातों को सुनकर वज्रकाय की प्रेतात्मा बहुत ही प्रसन्न हुई और वहाँ से चली गयी। जिनको देखना था, उन सबको देखने के बाद रूपधर नौका के पास लौटा। फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी। नौका शीघ्र ही सुकेशिनी के द्वीप में पहुँची।

सुकेशिनी ने सहर्ष रूपधर और उसके सहयोगियों का स्वागत किया। उसने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा "तुम असमान पराक्रमी हो। ऐसे तो सब लोग एक ही बार यमलोक जाते हैं, पर तुम लोग दूसरी बार भी वहाँ जा सकते हो। आज मेरे अतिथि बनकर रहो और पेट भर खाओ, विश्राम करो। कल प्रातःकाल यहाँ से निकलकर जा सकते हो।"

ग्रीक दिन भर खाते-पीते रहे। रूपधर को छोड़कर बाक़ी सब नौका के पास गये। वहाँ रेतीले प्रदेश पर मस्त सोते रहे। रूपधर सुकेशिनी के साथ ही रहा और यमलोक की समस्त विचित्रताओं को एक-एक करके बताया।

पूरा सुनने के बाद सुकेशिनी ने कहा, "यह सब गुज़रे दिनों की बात है। अब सोचना तो यह है कि आगे क्या हो। मेरी बातें ध्यान से सुनो। तुम्हारी यात्रा में पहले-पहल नागकन्याओं से मुलाक़ात होगी। उनके कंठों में सम्मोहन-शक्ति होती है। उनकी पुकार जो सुनें, उनकी बातें जो मानें, बस, समझ लो, उनकी मौत हो ही गयी। उनके द्वीप पर पहुँचने के पहले ही अपने अनुचरों के कानों में मोम घुसेड़ दो, जिससे नागकन्याओं के मधुर गीत उन्हें सुनायी ना पड़ें। अगर तुममें उनके गीतों को सुनने की इच्छा जगेगी तो तुम्हारे अनुचरों को चाहिये कि वे तुम्हें पतवार के स्तंभ से कसकर बाँध लें। पहले ही उनसे साफ-साफ बता दो कि मैं कितना भी चिल्लाऊँ, बिलखूँ, मुझे छोड़ना मत। तब तुम उनके गीत सुन सकते हो। इससे तुम्हें कोई ख़तरा नहीं होगा। नागकन्याओं के द्वीप को पार करने के बाद तुम्हें समुद्र में दो मार्ग दिखायी देंगे। मैं बता नहीं सकती कि तुम किस मार्ग पर यात्रा करने का निर्णय लोगे। एक मार्ग दो पर्वतों के बीच में से जाता है।

कोई भी व्यक्ति जब उनके बीच में से गुज़रने की चेष्टा करेगा, वे पहाड़ एक दूसरे से भिड़ जाएँगे और उस व्यक्ति को पीस डालेंगे। वे चलते-फिरते पहाड़ हैं। अब तुम्हारा दूसरा मार्ग है विध्वंसिनी पर्वत के बग़ल में। वह पर्वत बहुत ही ऊँचा है। इसका शिखर सदा मेघों से आच्छादित रहता है। इसलिए कोई भी उसे आज तक देख नहीं पाया। इस पर्वत के शिखर पर कोई चढ़ भी नहीं पाया। क्योंकि यह पर्वत चिकना होता है। इसपर चढ़ते समय पैर फिसल जाता है। उस पर्वत के बीच में एक गुफ़ा है। उसका मुख पश्चिमी दिशा की ओर है। उसमें विध्वंसिनी नामक एक राक्षसी है। कभी-कभी कुत्ते के पिल्ले की तरह कुँय-कुँय करती रहती है। फिर भी उसकी भोंक भय उत्पन्न करती है। उस राक्षसी के बारह पैर हैं और छे सिर। उसके छे के छे गले बहुत ही लंबे हैं। उसकी गुफ़ा समुद्री समतल से बड़ी ऊँचाई पर है। बड़े से बड़े धनुर्धारी का बाण भी वहाँ तक पहुँच नहीं सकता। फिर भी विध्वंसिनी कमर के ऊपर का भाग गुफ़ा से बाहर निकालकर, समुद्र की मछलियों को अपने मुँहों में डाल लेती है। उन्हें खा जाती है। अब तक कोई भी नाविक वहाँ से जीवित नहीं लौटा। उस पर्वत के पास ही एक भँवर है। उस भँवर में फँसी नौका व नाविक को ईश्वर भी बचा नहीं सकता। इसलिए अपनी नौका उस भँवर के ऊपर से होते हुए मत ले जाना। विध्वंसिनी पर्वत के बग़ल से ले जाना। नौका वेग से जाने लगी
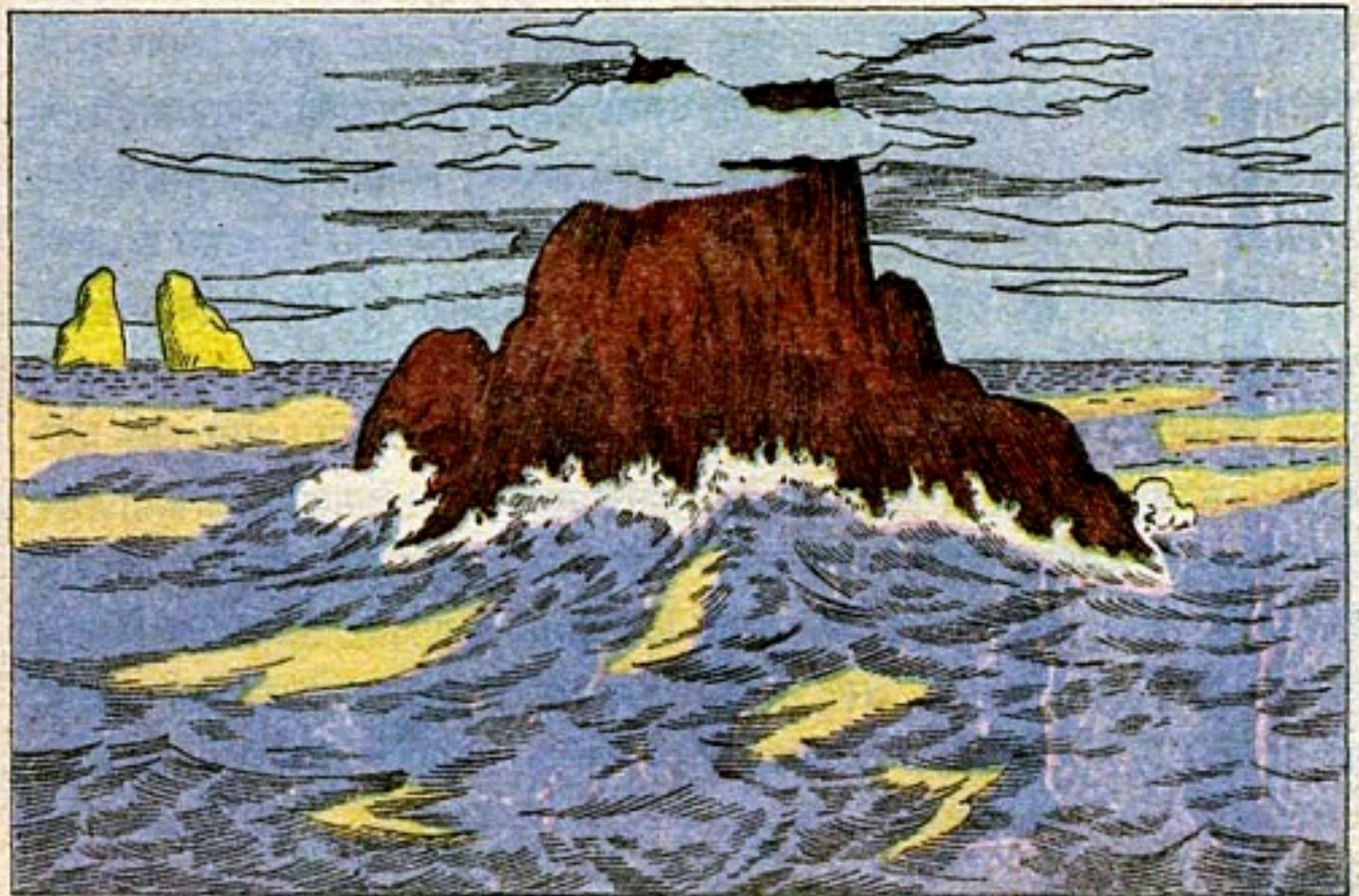
तो भी विध्वंसिनी अपने छे मुँहों से छे आदमियों को ही पकड़ पायेगी। बाक़ी बच सकते हैं।

इसके बाद तुम त्रिनासिया द्वीप पर पहुँचोगे। वहाँ सूर्य-भगवान की गायों तथा बकरियों के झुंड दिखायी देंगे। उनकी रखवालियाँ है सूर्य भगवान की दोनों पुत्रियाँ। उन पशुओं का ना ही जन्म होता है, ना मरण। वे शाश्वत हैं। तुम या तुम्हारे अनुचर उन पशुओं से दूर ही रहो। उनके पास तक मत पटकना। ऐसा करने पर तुम्हारी नौका और तुम्हारे अनुचर मिट जाएँगे। तुम तो कष्टों से बच नहीं सकते, इसलिए कम से कम इन कष्टों को बढ़ाना मत, उनमें फँसना नहीं।''

सुकेशिनी ने भविष्य का स्पष्ट खींचा। सबेरे रूपधर अपनी नौका के पास आया। उसने अपने अनुयायियों को जगाया। वे वहाँ से नाव चलाते हुए तुरंत निकल पड़े। सुकेशिनी की मेहरबानी से हवा भी उनके अनुकूल चली, जिससे आगे बढ़ने में उन्हें कोई दिक़्क़त नहीं हुई।

पहला ख़तरा नागकन्याओं से था, इसलिए रूपधर ने अपने अनुयायियों को सुकेशिनी की सारी बातें बतायीं, जिससे वे सावधान रह सकें। उनके कानों में मोम भर दी और उन्हें बहरा बना दिया। फिर उन लोगों ने रूपधर को मोटी रस्सी से पतवार के स्तंभ से कसकर बांध दिया। उसने उनसे कहा ''अगर मैं अपने को छुड़ाने की कोशिश करूँ तो और कसकर बाँध दीजिये। मुझे किसी भी हालत

रूपधर ने देखा कि दूर पर बड़ी ही लहर गोलाकार में घूम रही है। वह जान गया कि यही भँवर है। उस भँवर को देखकर उसके अनुयायी भयभीत हो गये।

रूपधर ने कहा "ड़रो मत। फाललोचन के आक्रमण से यह कोई अधिक ख़तरनाक नहीं है। दीखनेवाले उस पहाड़ के निकट नाव को ले जाओ।"

उसने अपने अनुचरों को, पर्वत की गुफ़ा में रहनेवाली राक्षसी विध्वंसिनी के बारे में कुछ भी नहीं बताया। उसका जिक्र ही नहीं किया। अगर वह उनसे कहता तो अवश्य ही वे अपनी डाँडें फेंक देते और पता नहीं, घबराकर क्या कर बैठते। मात्र रूपधर, उस पर्वत की ओर ग़ौर से देखता रहा। मेघों के छा जाने की वजह से उसे ना ही वह गुफ़ा दिखायी पड़ी अथवा ना ही वह राक्षसी। बाक़ी ग्रीकों की दृष्टि तो भँवर पर ही केंद्रित थी।

इतने में अकस्मात राक्षसी ने अपने छहों सिरों को बाहर निकाला और रूपधर के छे अनुचरों को गुफ़ा में खींच लिया। नाव पहाड़ से आगे बढ़ी।

रूपधर ने देखा कि सामने एक अतिसुंदर द्वीप है। उस द्वीप से गायों और बकरियों की आवाज़ें आ रही थीं। इसी द्वीप में सूर्यभगवान की पशु-संपदा है।

रूपधर को तुरंत सांकेतिक और सुकेशिनी

में आज़ाद मत कीजिये।

जैसे ही नागकन्याओं ने नाव देखी, ऊँचे सुर में मधुर आलाप करने लगीं। उन्होंने रूपधर को उसका नाम लेकर पुकारा। उन्होंने उससे कहा कि हमारे मीठे गीत सुनो। उनके मधुर गीत सुनने में वह लीन हो गया। वह और सुनने के लिए तड़पने लगा। उसने अपने अनुचरों से गिड़गिड़ाया कि मुझे छोड़ दो। उसके रुख को देखते हुए उन्होंने उसे और कसकर बांध दिया।

थोड़ी ही देर में नाव आगे बढ़ गयी। अब उसे गीत सुनायी नहीं दे रहे थे। तब रूपधर के अनुचरों ने अपने कानों से मोम निकाल लिया। रूपधर को मुक्त कर दिया। तब

की चेतावनी का स्मरण आया। डरते हुए उसने अन्य अनुचरों से बताया "मित्रो, हम इतने भाग्यवान नहीं हैं कि इस द्वीप पर हम उतर पायें। मुझे मालूम है कि आप सब थके हुए हैं और विश्राम करने के लिए छटपटा रहे हैं। किन्तु सांकेतिक और सुकेशिनी ने मुझे सावधान कर दिया कि इस द्वीप में क़दम रखना खतरे से खाली नहीं। जान-बूझकर आफ़त मोल लेनी होगी। इसलिए नाव को द्वीप की बायीं ओर घुमाइये।" उसकी बातें सुनकर वे हताश हो गये। उनका उत्साह ठंडा पड़ गया। मायावी नाराज होता हुआ बोला "रूपधर, तुम मनुष्य नहीं, शिला हो। तुम्हें विश्राम नहीं चाहिये। सदा काम में जुटे रहना ही तुम्हारा लक्ष्य है। इन आदमियों को देखो। कितने थके हुए हैं। इन्हें देखकर लगता है कि किसी भी क्षण इनके प्राण-पखेरू उड़ जाएँगे। तुम तो इनको द्वीप में उतरने से मना कर रहे हो। खाना बनाकर खाने से भी इन्हें रोक रहे हो। रात होनेवाली है। शायद आँधी आये, ज़ोर की हवा चले। इस आँधी में हम बीच समुँदर में ही रहें तो ज़रा सोचो तो सही, हमपर क्या गुज़रेगा? हमारी कैसी दयनीय स्थिति होगी। जो भी हो, इस द्वीप पर उतरेंगे और खाना बनाकर खायेंगे। कल सबेरे निकलकर जाएँगे।"

मायावी की बातों का समर्थन और ग्रीकों ने ज़ोर से किया। रूपधर जान गया कि विधाता का लिखा कोई मिटा नहीं सकता। उसने मायावी से कहा "आप सबों की यही राय है तो मुझ अकेले से क्या होगा? किन्तु तुम सबको एक प्रतिज्ञा करनी होगी। गायें या बकरियाँ दिखायी भी पड़ीं तो हमें उन्हें छूना तक नहीं चाहिये। सुकेशिनी के दिये हुए आहार को छोड़कर कोई और चीज़ छुएँगे तक नहीं, खायेंगे नहीं। बकरी को पकड़कर उसे मारकर खाने की कोशिश नहीं करेंगे। आप वचन दीजिये। अपने वचन से बद्ध होने सन्नद्ध हों तभी हम इस त्रिनासिया द्वीप पर पैर रखेंगे।"

सबने मुक्तकंठ से वचन दिया।

दानगुण

त्रिलिंग देश का राजा विशाखदत्त दानी था। प्रधान मंत्री चाहता नहीं था कि यों देश की आमदनी इस प्रकार खर्च हो। मौक़ा पाकर उसने राजा को समझाना चाहा।

एक ग़रीब औरत एक दिन राजसभा में आयी। उसने कहा "महाराज, दो साल पहले मेरा पति एक दुर्घटना में मर गया। तब से मैं अनाथ हो गयी। एक ही बेटा है और वह बीमार है। उसकी चिकित्सा के लिए मुझे आपकी सहायता चाहिये। जन्म-भर आपकी ऋणी रहूँगी।" ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई वह कहने लगी।

विशाखदत्त का दिल उसकी करुण कथा सुनकर पसीज उठा। उसने उसे सौ अशर्फ़ियाँ दीं और भेज दिया।

दूसरे दिन सिपाहियों ने उस युवती को क़ैद किया और राजा के पास ले आये। उन्होंने राजा से कहा "महाराज, यह एक नंबर की धोखेबाज़ है। मंत्री ने उसके पीछे एक खुफ़िया लगा दिया, जिससे सच्चाई मालूम हुई। उसका पति और उसका बेटा दोनों सकुशल हैं।"

तब मंत्री ने दख़ल देते हुए कहा "देखा महाराज, आपके दानगुण का सहारा लेकर आप ही को कैसा धोखा दिया?"

राजा ने उस युवती को ग़ौर से देखते हुए कहा "महामंत्री, कष्टों की कल्पना करके रोना-धोना सहज है। किन्तु यह साधारण व्यक्तियों के बस की बात नहीं है। इसमें बड़ी अभिनेत्री के लक्षण दिखायी दे रहे हैं। कलाकारों का सम्मान करना भी तो हमारी जिम्मेदारी है। सौ अशर्फ़ियाँ उसे और दीजिये और बिदा कीजिये।

- बंसीलाल
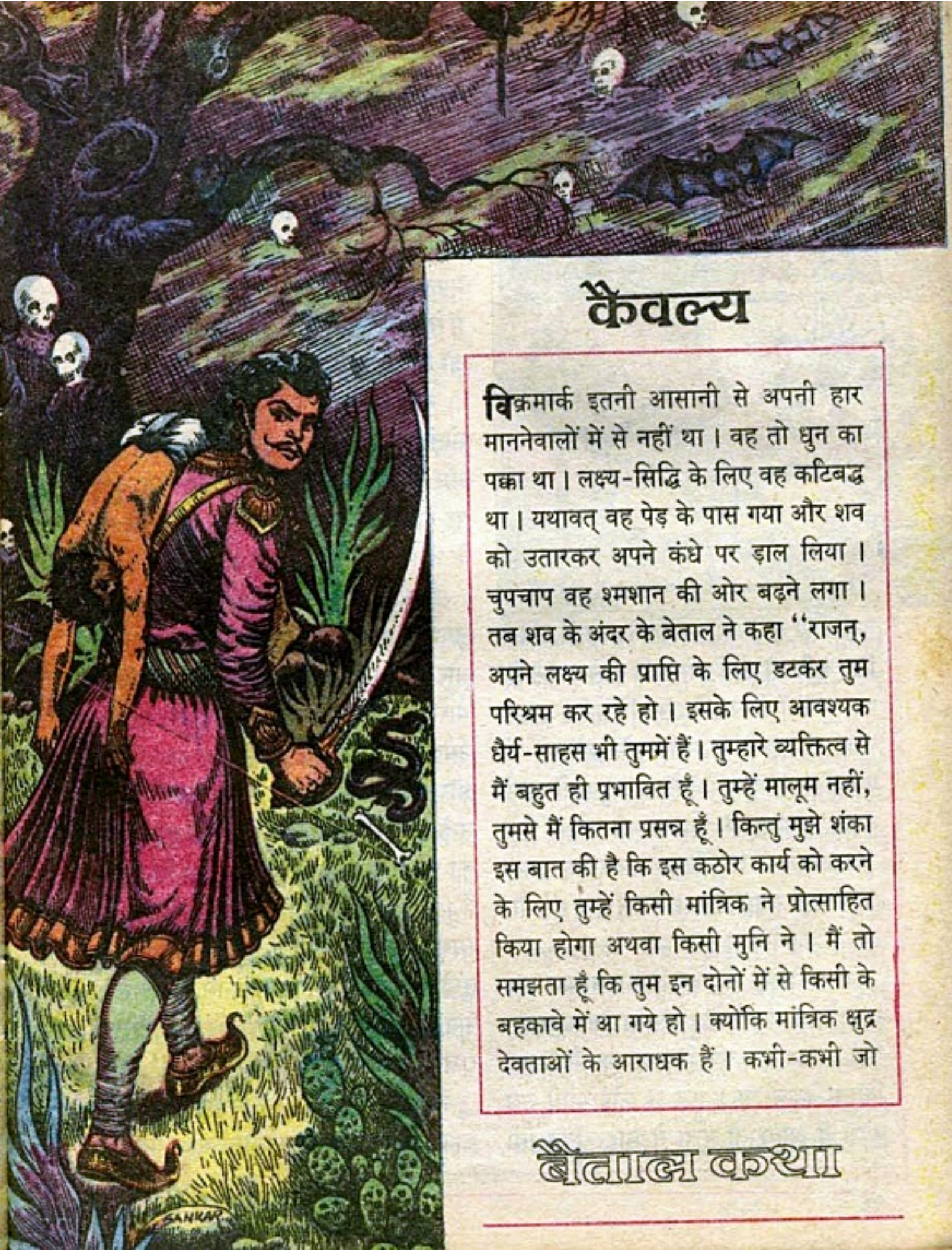
कैवल्य

विक्रमार्क इतनी आसानी से अपनी हार माननेवालों में से नहीं था। वह तो धुन का पक्का था। लक्ष्य-सिद्धि के लिए वह कटिबद्ध था। यथावत् वह पेड़ के पास गया और शव को उतारकर अपने कंधे पर ड़ाल लिया। चुपचाप वह श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए डटकर तुम परिश्रम कर रहे हो। इसके लिए आवश्यक धैर्य-साहस भी तुममें हैं। तुम्हारे व्यक्तित्व से मैं बहुत ही प्रभावित हूँ। तुम्हें मालूम नहीं, तुमसे मैं कितना प्रसन्न हूँ। किन्तु मुझे शंका इस बात की है कि इस कठोर कार्य को करने के लिए तुम्हें किसी मांत्रिक ने प्रोत्साहित किया होगा अथवा किसी मुनि ने। मैं तो समझता हूँ कि तुम इन दोनों में से किसी के बहकावे में आ गये हो। क्योंकि मांत्रिक क्षुद्र देवताओं के आराधक हैं। कभी-कभी जो

बैताल कथा

कार्य स्वयं साधे नहीं जा सकते, उनकी पूर्ति के लिए वे किसी भोले-भाले की बलि चढ़ाते हैं। पर, मुनियों की पद्धति इससे भिन्न है। अगर वे चाहें तो अपनी तपोशक्ति से दुष्टों को भी पुण्यलोक में पहुँचा देते हैं। किन्तु कभी-कभी उनके संकल्प के विरुद्ध भी होता है। उदाहरणस्वरूप निकुँभिका नामक एक राक्षसी की कहानी सुनाऊँगा। ध्यान से सुनो।'' और वह यों कहने लगा।

दण्डकारण्य में निकुँभिका नामक एक राक्षसी रहा करती थी। नरमांस उसका अत्यंत प्रिय आहार था। एक विशाल गुफ़ा में उसका निवास-स्थल था। भूल से कोई यात्री उस प्रदेश में आता तो गुफ़ा से बाहर निकलती और उसे मारकर खा जाती थी।

निकुँभिका एक दिन गुफ़ा में मस्त सो रही थी। तब विवाह के अवसर पर जाता हुआ लोगों का एक समूह उस ओर से गुज़र रहा था। मानव की गंध सूँघते ही अंगडाई लेती हुई वह गुफ़ा से बाहर आयी। उसे देखकर उस समूह में से कुछ लोग भयभीत हो गये और भाग गये। जो मिले, उसने उन्हें खा लिया।

नरमांस खाकर एक सप्ताह तक वह मस्त सोती रही। जागते ही उसे ज़ोर की भूख लगी और वह जंगल में घूमने लगी। उसने एक जगह पर देखा कि विनयशील नामक मुनि एक पेड़ के तले तपस्या में लीन है।

निकुँभिका उसे देखकर खुश हुई। उसे लगा कि मुझे आहार मिल गया। वह मुनि की ओर बढ़ने लगी तो उसने देखा कि उस मुनि के चारों ओर अग्नि-ज्वालाएँ वलयाकार में घिरकर उसकी रक्षा कर रही हैं। मुनि ने आँखें खोलीं और कहा ''निकुँभिका, मनुष्यों को मारकर उन्हें खा जाने के निकृष्ट जीवन से मुक्ति पाने का प्रयत्न करो। कल परम पवित्र शिवरात्रि है। किसी मानव को खाये बिना भगवान के स्मरण में अपना समय गुज़ारो। एक मानव से तुम्हें गंगाजल प्राप्त होगा, जिससे तुम्हारे सारे पाप धुल जाएँगे। उस पानी को पीते ही इस राक्षस-जन्म से तुम्हें मुक्ति मिलेगी।''

निकुँभिका ने मुनि को प्रणाम किया और कहा ''महानुभाव, आपने जैसा कहा, वैसा ही

करूँगी।" फिर वह वहाँ से चली गयी। भूख से वह तड़पने लगी।

शिवरात्रि के दिन राक्षसी ने देखा कि नागभैरव नामक महाचोर घोड़े पर बैठा आ रहा है। उससे भूख सही नहीं गयी। वह गुफ़ा से बाहर आयी और उसे पकड़कर अपनी हथेली में ले लिया।

नागभैरव थर-थर काँपता हुआ गिड़गिड़ाता हुआ बोला "मुझे मारो मत।"

उसकी बातें सुनकर राक्षसी को पिछले दिन की मुनि की बातें याद आयीं। उसने नागभैरव को ज़मीन पर खड़ा कर दिया और पूछा "कौन हो तुम? सच बोलो।"

नागभैरव ने कहा "मैं महाचोर हूँ। नागभैरव मेरा नाम है। अभी-अभी एक घर में चोरी की और गहने चुराकर आ रहा हूँ। वे गहने तुम्हें दे दूँगा। मुझे मारना मत।"

निकुंभिका चोर की बातों पर ज़ोर से हँस पड़ी और बोली "अरे अधम नर, तुम्हारे गहनों की क्या ज़रूरत है मुझे।" उस समय मुनि की बातें स्मरण में तो आयीं, पर भूख से तड़पती उसने उस चोर को खा लिया। इतने में उसने थोड़ी दूरी पर एक आदमी को देखा। राक्षसी तुरंत एक वटवृक्ष के पीछे चली गयी और छिप गयी। जैसे ही वह पास आया, वह गरज उठी "कौन हो तुम?"

राक्षसी को देखते ही वह काँपने लगा। बोला "मेरा नाम वीरदास है। कलिंग राजा के

यहाँ रसोइया हूँ। हठात् महाराज मुझपर नाराज़ हो गये। मुझे नौकरी से निकाल दिया और जंगल में भेज दिया।"

निकुंभिका ने तीव्र दृष्टि से उसे देखते हुए पूछा "बिना कारण के राजा तुम्हें नौकरी से क्यों निकाल देगा? तुमने ज़रूर कोई अपराध किया होगा। सच बता।"

वीरदास ने क्षीण स्वर में कहा "महाराक्षसी, सच बताऊँगा। मुझे मारना मत। पड़ोसी राजा ने मुझे बहुत धन दिया और कहा कि अपने महाराज के आहार में विष मिलाना। यह करते-करते मैं पकड़ा गया।"

उसके उत्तर पर निकुंभिका विकट अट्टहास करती हुई बोली "राजा से निकाल दिये गये

और मेरे हाथ आ गये।'' कहती हुई उसने उसे अपने मुँह का कौर बना लिया।

फिर भी उसकी भूख नहीं मिटी। गुफ़ा में बैठी वह ऊँघ रही थी। तब शिवकांत नामक एक युवक उधर से गुज़र रहा था। उसे देखते ही उठ खड़ी हो गयी और उससे कहा ''अरे मानवाधम, रुक जाओ। तुम्हारी यात्रा यहीं समाप्त होती है।''

शिवकांत राक्षसी को देखकर बिल्कुल नहीं डरा। उसने निर्भय हो पूछा ''क्यों मुझे रुकने के लिए कह रही हो?''

उसके प्रश्न पर वह ठठाकर हँसती हुई बोली ''क्या तुम इतने बुद्धू हो कि इतना भी नहीं जानते कि मैंने क्यों तुम्हें रुक जाने के लिए कहा। दो आदमियों को खा चुकी हूँ। पर, पेट भरा नहीं है। लगता है, मैंने सिर्फ नाश्ता किया, खाना नहीं खाया। इसीलिए मैंने तुम्हें रुकने के लिए कहा।''

निर्भीकता से शिवकांत ने कहा ''तो मुझे खा जाओ और अपनी भूख मिटाओ। अगर तुम्हारी भूख मिटा पाया तो इससे बढ़कर आनंद क्या हो सकता है।''

उसकी बातों पर चकित निकुंभिका ने पूछा, ''मृत्यु का तुम्हें डर नहीं?''

''क्यों डरूँ? हर आदमी को एक ना एक दिन मरना ही पड़ेगा। कोई भी शाश्वत नहीं है। किसी बीमारी से मरने से अच्छा तो यही है कि तुम्हारा आहार बनकर तुम्हारी भूख मिटाऊँ।'' शिवकांत ने कहा।

निकुंभिका को लगा कि यह कोई साधारण मानव नहीं है। फिर भी उसे संदेह हुआ कि यह मानव कहीं नाटक तो नहीं कर रहा है। अपनी मीठी बातों से मुझे फुसला तो नहीं रहा है। उसने उसे अपने बायें हाथ में ले लिया। तब शिवकांत ने कहा ''एक क्षण के लिए रुक जाओ। मेरी पत्नी बहुत समय से बीमार है। काशी गया था और उसी के लिए गंगाजल ला रहा हूँ। यह गंगाजल उसे दे नहीं पाऊँगा। भला यह क्यों व्यर्थ हो जाए। तुम्हीं पीओ। अगले जन्म में ही सही, तुम्हें उत्तम जन्म मिलेगा।''

राक्षसी ने तुरंत शिवकांत को भूमि पर रखा और कहा ''महात्मा, यह गंगाजल अपनी पत्नी

को ही दो।'' कहती हुई उसने साष्टांग नमस्कार किया।

शिवकांत के पैर छूते ही राक्षसी को कैवल्य प्राप्त हुआ।

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा ''राजन्, मुनि विनयशील ने, राक्षसी निकुंभिका से बताया था कि शिवरात्रि के दिन किसी को मार डालना मत। दिन भर भगवान के स्मरण में लीन रहना। एक मानव से तुम्हें गंगाजल प्राप्त होगा। उसे पीने पर राक्षस-जन्म से तुम्हें मुक्ति मिलेगी। किन्तु निकुंभिका ने उस दिन दो मानवों को खा लिया। शिवकांत को छोड़ दिया। वह गंगाजल देनेवाला था, पर उसे भी उसने नहीं लिया। फिर भी उसे मोक्ष प्राप्त हुआ। यह कैसे संभव हो पाया ? गंगाजल ना पीने पर भी उसे यह मोक्ष कैसे प्राप्त हुआ ? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा ''निकुंभिका ने जिन दो आदमियों को मारा था, उनमें से एक महाचोर है। दूसरा अपने ही स्वामी का द्रोही है। एक लुटेरा है तो दूसरा प्रभू के प्राणों का हरण करनेवाला है। वे नररूप राक्षस हैं, नर नहीं। इसीलिए, यद्यपि उसने शिवरात्रि के दिन दोनों को मारकर खा लिया, पर उसने पाप नहीं किया। शिवकांत का दिया हुआ गंगाजल उसने छुआ तक नहीं, फिर भी राक्षसी को कैवल्य प्राप्त हुआ। इसका कारण है कि अपनी मृत्यु को आँखों के सामने देखते हुए भी शिवकांत ने राक्षसी के प्रति अपनी घृणा व्यक्त नहीं की। उल्टे उसने चाहा कि अगले जन्म में ही सही, उसे उत्तम जन्म मिले। पत्नी के लिए लाया हुआ गंगाजल उसे देना चाहा। ऐसे त्यागधनी, दैवसमान व्यक्तियों का पादस्पर्श पवित्र गंगाजल से भी अधिक शक्तिशाली व प्रभावशाली होता है। निकुंभिका को मुनि की बातें याद थीं। फिर भी त्यागी शिवकांत से उसने गंगाजल नहीं लिया। और कहा भी कि इसे अपनी पत्नी को ही दो। इन कारणों से ही राक्षसी को कैवल्य मिला।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार - तरुण चटर्जी

बड़ा कौन ?

धर्मपुरी के ज़मींदार राजशेखर ने अपने दीवान से एक दिन कहा ''गाँवों में जाइये, जो कर वसूल करने हैं, कीजिये। साथ ही जानिये कि जनता क्या कहती है और वह किस हालत में है।''

दीवान दो नौकरों को लेकर सब गाँवों में गया। करों की वसूली की और साथ ही जनता की आवश्यकताओं तथा उनकी मुसीबतों की भी जानकारी प्राप्त की। उन्हें उन गाँवों में मायामयी नामक एक ही गाँव ऐसा दिखायी पड़ा, जहाँ यातायात की सुविधा नहीं है। गाँव के लोग भी बहुत ही भोले-भाले लगे। उन्हें यह भी मालूम नहीं था कि कर चुकाना है।

धर्मपुरी लौटने के बाद दीवान ने, जमींदार को गाँवों का पूरा विवरण दिया और कहा ''मालिक, हमारे गाँवों में से मायामयी नामक गाँव बहुत ही पिछड़ा गाँव है। बड़ा ही अजीब गाँव है। वहाँ के निवासी एकदम भोले-भाले हैं। मैंने ऐसे लोगों को कहीं और नहीं देखा।'' उन्होंने उनके भोलेपन के कुछ उदाहरण भी दिये।

इस समय तर्कानंद स्वामी भी वहाँ उपस्थित था। वह इस समय तर्क-शास्त्र पर प्रवचन देता हुआ देश भर में भ्रमण कर रहा था। दीवान की बातें सुनकर मुस्कुराता हुआ स्वामी ने कहा ''यहाँ के मनुष्यों के भोलेपन का मुख्य कारण है, उनमें तर्कशक्ति का लुप्त हो जाना। यह एक प्रकार का रोग है। ऐसे लोगों में तार्किक पद्धति की आदत ड़ालनी चाहिये।

ज़मींदार ने संदेह-भरे स्वर में पूछा ''क्या यह संभव है?'' ''क्यों नहीं? संपूर्ण विश्व तर्क पूरित है। सूर्य-चंद्र, नक्षत्र सभी तर्क-शास्त्र के अनुरूप ही भ्रमण कर रहे हैं। मैं अपने दो शिष्यों के साथ उस गाँव में

रमेश दुआ

जाऊँगा । किसी आदमी को मेरे साथ भेजिये, जो मुझे वह गाँव दिखा सकता है। थोड़े ही दिनों में उन ग्रामवासियों को अक़्लमंदी और विवेक में सक्षम बनाऊँगा। शुक्राचार्य व ब्रहस्पति के समान बनेंगे।'' स्वामी ने दावा किया।

ज़मींदार ने सहर्ष उसके प्रस्ताव को मान लिया। तर्कानंदस्वामी ने ज़मींदार से बिदा ली और अपने शिष्यों सहित मायामयी गाँव पहुँचा।

गाँव देखने में सुँदर लग रहा था। दूरी से समुँदर का घोष सुनायी दे रहा था। जहाँ देखो, हरेभरे खेत थे। गाँव के चारों ओर फलों से लदे वृक्ष थे। थोड़ी ही दूरी पर छोटा-सा जंगल भी था। गाँव पहाड़ों से घिरा हुआ था।

यह दृश्य देखकर तर्कानंदस्वामी के शिष्यों ने कहा ''गुरुवर, विश्वास ही नहीं होता कि इतने सुँदर प्रदेश में भोले-भाले लोग होंगे।''

तर्कानंदस्वामी उनपर चिढ़ता हुआ बोला ''क्या तुम समझते हो कि दीवान ने झूठ कहा। तुम लोग जाओ और गाँव के सब लोगों को, गाँव के बीचों बीच स्थित बरगद के पेड़ के पास आने को कहो।''

दोनों शिष्य गाँव के हर घर पर गये। उन्होंने हर एक से बताया ''तर्कानंदस्वामी बीस साल हिमालय में रह चुके हैं। विंध्य

पर्वतों पर दस सालों तक तपस्या की है। तर्कर्षि नामक ऋषि पुंगव से उन्होंने तर्कशास्त्र के सार को ग्रहण किया है। वे तर्कशास्त्र पर प्रवचन देंगे, जिसे सुनने आप सब बरगद के पेड़ के पास आयें।''

उनकी समझ में नहीं आया कि यह तर्कशास्त्र होता क्या है ? चकित वे सब पेड़ के पास आये।

इतने लोगों को आया देखकर तर्कानंदस्वामी बहुत प्रसन्न हुआ। वह बरगद के नीचे के चबूतरे पर आसन लगाकर बैठ गया। वह कुछ कहने ही वाला था कि उसके एक शिष्य ने गुरु के कान में बताया ''इनके चेहरों को देखते

हुए लगता है कि इनमें से कुछ दुष्ट और घमंडी हैं। आपकी कही बातें सही नहीं लगीं तो हमारा पीछा करके हमें पीटने का भी ख़तरा है। इसलिए अच्छा यही होगा कि आप इन्हें क्षमा-गुण, क्षमा-भिक्षा के बारे में प्रवचन दें।''

''शिष्य, बड़ी अच्छी सलाह दी। किसी दिन अवश्य ही तुम मेरे प्रधान शिष्य बनोगे।'' कहते हुए तर्कानंदस्वामी ने शिष्य की प्रशंसा की। फिर उसने जनता से कहा ''सब जन्मों में से उत्तम जन्म है, मानव-जन्म। सब गुणों में से उत्तम गुण है क्षमा-गुण। इसे ही क्षमा-भिक्षा भी कह सकते हैं। इससे बढ़कर कोई और उत्तम धर्म नहीं है।''

तब भीड़ में से एक आदमी ने उठकर कहा ''घर में चोरी करते हुए एक आदमी को मैंने पकड़ा। पर उस चोर को माफ़ कर दिया और छोड़ दिया। स्वामी, क्या मेरा क्षमा-गुण उत्तम नहीं ?''

एक और आदमी खड़ा हो गया। उसने कहा ''एक आदमी को मैंने पकड़ लिया, जो मेरे घर में चोरी कर रहा था। उसे ना ही गालियाँ दीं और ना ही पीटा। मैंने उससे कहा, अब तक जिन-जिन चीज़ों की चोरी की, उन्हें ले जाओ। स्वामी, मेरा क्षमा-गुण भी उत्तम ही है ना?''

उसकी बात ख़तम होते ही एक और खड़ा हो गया और कहने लगा ''ऐसी ही परिस्थितियों में पकड़े गये एक चोर की मैंने आवभगत की, उसका आदर-सत्कार किया। जो चीज़ें उसे चाहिये, उन्हें निस्संकोच ले जाने की अनुमति दी। क्या मेरा क्षमा-गुण उन दोनों के क्षमा-गुणों से उत्तम नहीं ?''

इसपर तर्कानंदस्वामी ने कहा ''तुम सबों के क्षमा-गुणों से बढ़कर क्षमा-गुण है उन चोरों का। आप सब भोले-भाले हैं। अच्छा हुआ, चोर आप लोगों को किसी प्रकार की हानि पहुँचाये बिना चले गये। आप लोग बाल-बाल बच गये।'' वह शिष्यों को लेकर एक पल का भी विलंब किये बिना वहाँ से चलता बना।

दीव (अंग्रेजी उच्चारण 'ड्यू') खंभात की खाड़ी के पश्चिमी मुहाने पर छोटा-सा द्वीप है. उसका यह नाम संस्कृत शब्द 'द्वीप' पर से पड़ा है. केवल ४० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का दीव कभी बहुत महत्वपूर्ण पत्तन था. सन १५९३ में पुर्तगालियों ने उस पर अधिकार कर लिया और १९६१ तक वह उनके कब्जे में रहा. उसके बाद गोवा और दमण के साथ उसे भारत में मिला लिया गया. अब दमण और दीव संयुक्त संघीय क्षेत्र हैं.

समुद्रतट की सैर-२
खंभात की खाड़ी

आलेख : मीरा नायर ◆ चित्र : गोपकुमार

दीव का किला पुर्तगालियों ने बनवाया था. उसके तीन ओर समुद्र है और चौथी ओर गहरी खाई. किले में बहुत ऊंचा प्रकाश-स्तंभ भी है, जिसकी गैस की रोशनी दूर-दूर तक दिखाई देती है.

खंभात की खाड़ी में उत्तर-पश्चिमी तट पर है भावनगर. वहां से ४० किलोमीटर दूर पर अलंग का जहाज तोड़ने का कारखाना है. बेकार हो चुके जहाजों को तोड़ना तकनीकी काम है. समुद्र के खारे पानी पर तैरते-तैरते जब जहाज 'बूढ़ा' हो जाता है, तब उसे तोड़ दिया जाता है. अलंग का कारखाना १९८३ में आरंभ किया गया. आज वह दुनिया में अपने ढंग का सबसे बड़ा है और वहां नाना देशों से जहाज तोड़ने के लिए लाये जाते हैं. जहाज बनाने के कारखाने समुद्रतट से करीब १,००० मीटर दूर होते हैं. लेकिन अलंग का कारखाना ऐसी जगह पर है कि ज्वार के समय जहाज एकदम तट के किनारे ला कर खड़े किये जा सकते हैं.

अलंग के उत्तर-पूर्व में एक छोटा-सा द्वीप है *पीरम.* उसके दक्षिण-पूर्व कोने में खड़ी कुछ चट्टानों पर प्राचीन जानवरों के जीवाश्म (फॉसिल) बड़ी मात्रा में मिलते हैं. हाथी, घोड़े, गैंडे, दरियाई घोड़े, बैल, मगरमच्छ, कछुए और बड़ी-बड़ी मछलियां सभी के जीवाश्म चट्टानों में मौजूद हैं.

खंभात की खाड़ी क्षेत्र में ही प्राचीन नगर लोथल भी है. वहां खुदाई करने पर ४,००० से ३,००० ई.पू. के सिंधु घाटी सभ्यता के एक बड़े शहर के अवशेष मिले हैं. लोथल बंदरगाह से मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार होता था. लोथल की गोदी में पानी का नियंत्रण किया जाता था, ताकि भाटे के समय कम पानी में जहाज किनारे तक आ सकें. कई भारी बाढ़ों के कारण भूस्खलन हुआ और बंदरगाह में मिट्टी भर गयी. आज लोथल समुद्रतट से कुछ किलोमीटर दूर है.

लोथल के उत्तर-पूर्व में एक प्राचीन पत्तन और भी था – खंभात, जिसे अंग्रेज कैम्बे कहते थे. खाड़ी का नाम इसी शहर के नाम पर पड़ा है. वर्तमान काल में वहां खनिज तेल के स्रोत मिले हैं, जिससे उसका नाम फिर से सुनाई देने लगा है. खंभात की साड़ियां मशहूर हैं. कम कीमती रत्न अकीक का लघु उद्योग भी यहां है. यह रत्न अरब और खाड़ी देशों में तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में खूब लोकप्रिय है.

असल में गुजरात के समुद्र में खासे बड़े क्षेत्र में खनिज तेल मिलता है. खंभात के अलावा दूसरा बड़ा तेल-क्षेत्र भरुच के पास अंकलेश्वर में है.

गुजरात के प्राचीन पत्तनों में से कुछ ही आज उसी हालत में हैं. नर्मदा के मुहाने पर बसा भरुच (भड़ौच) पहले भरुकच्छ कहलाता था और प्राचीन काल में पश्चिम भारत का बहुत बड़ा बंदरगाह और व्यापारकेंद्र था. दक्षिण भारत और विदेशों से वहां जहाज आते थे और उनका माल दूसरे स्थानों को भेजने के लिए वहां के गोदामों में रखा जाता था. ताप्ती नदी के तट पर बसा सूरत व्यापार और धर्म दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण था. सोलहवीं शताब्दी में मुगलों के राज्यकाल में उसे *मक्का का द्वार* कहा जाता था.

सत्रहवीं शताब्दी में डच, फ्रांसीसी और अंग्रेजों ने सूरत में अपनी फैक्टरियां यानी व्यापार की कोठियां बना ली थीं.
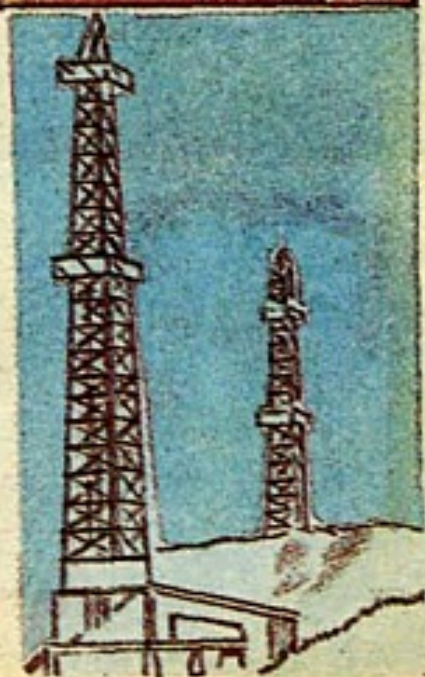
शिवाजी की मराठा सेना ने दक्षिण में मुगल आक्रमणों का जोर घटाने के लिए १६६४ में सूरत पर धावा बोल दिया. सूरत उन दिनों मुगलों के गुजरात सूबे की राजधानी था. वहां का सूबेदार इनायत खां अपनी जान बचाने किले में छिप गया और उसने शहर और उसके निवासियों को मराठा फौज की दया पर छोड़ दिया. वहां की अंग्रेजी और डच व्यापारिक कोठियों ने तो अपनी रक्षा कर ली; लेकिन सूरत शहर बुरी तरह लूटा गया.

इस आक्रमण के बाद सूरत शहर के चारों ओर ऊंची व मजबूत दीवार चुनवायी गयी. लेकिन उससे खास लाभ नहीं हुआ. छह साल के बाद शिवाजी ने सूरत पर फिर हमला किया.

इस बार मुगल अफसर और सिपाही शहर छोड़ कर भाग गये. शिवाजी ने सूरत से अपार धन-दौलत बटोरी. सूरत शहर इन दो आक्रमणों के असर से कभी उबर नहीं सका. १९ वीं शताब्दी तक यहां का वाणिज्य, व्यापार और ऐश्वर्य बंबई की ओर कूच कर गया.

मगर आज सूरत फिर से एक बड़ा व्यापारकेंद्र बन गया है. वहां का जरी का काम, रेशमी साड़ियां व रेयान का कपड़ा बहुत मशहूर हैं. हमारे देश में हीरा तराशने का सबसे बड़ा केंद्र भी वही है.

खंभात की खाड़ी के पूर्वी तट पर गुजरात की तटरेखा के अंतिम छोर पर संजान शहर है. आठवीं शताब्दी में ईरान से पारसी धर्मावलंबी संजान में ही भारतभूमि पर उतरे थे, जहां पत्थर का एक स्तंभ बना हुआ है.

उन दिनों जाडी राणा संजान के राजा थे. ईरान से आये इन लोगों को अपने राज्य में शरण देने में वे कुछ हिचकिचाये. राणा की आज्ञा से दूध से भरा एक कटोरा पारसियों के मुखिया मेहरजी के सामने पेश किया गया. उनका आशय था, "मेरा राज्य इस दूध के कटोरे की तरह (मेरी प्रजा से) लबालब भरा है. इसमें आप लोगों के लिए तनिक भी जगह नहीं है." मेहरजी ने थोड़ी-सी शक्कर दूध पर धीरे से बुरक दी और कटोरा वापस कर दिया. उनका मतलब था, "मेरे साथी आपकी प्रजा के साथ घुल-मिल जायेंगे और आपके राज्य की उन्नति में सहायक बनेंगे."

जाडी राणा मेहरजी के उत्तर से प्रसन्न हो गये और उन्हें अपने राज्य में बसने की अनुमति दे दी. पारसी समुदाय अपने वचन के अनुसार गुजरात के जनजीवन में घुल-मिल गया. उसने अपने नये देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

संजान के उत्तर में उदवाडा में पारसियों की सबसे पवित्र अगियारी (अग्नि-मंदिर) *ईरानशाह आतिश बेहराम* है. पारसी अपने साथ ईरान से जो पवित्र अग्नि लेकर आये थे, वह यहां आज तक प्रज्ज्वलित रखी गयी है. इस अग्नि-मंदिर का बड़ा दस्तूर (पुजारी) बनाया जाना बहुत सम्मान की बात मानी जाती है.

खंभात की खाड़ी के आर-पार एक बांध बनाने की योजना पर विचार किया जा रहा है. उद्देश्य है खाड़ी के उत्तरी हिस्से को मीठे पानी की झील में बदलना. मीठा पानी खाड़ी में गिरनेवाली साबरमती, मही आदि नदियों से आता है.

घी का दान

कालीघाट नामक गाँव में माधव नामक घी का एक व्यापारी था। वह घी के बारे में काफ़ी सावधानियाँ बरतता था। इस कारण घी बहुत ही दिनों तक शुद्ध रहता था, उसमें दुर्गंध नहीं आती थी और हमेशा ताज़ा होता था। जनता को उसपर पूरा भरोसा था। इस वजह से उसका व्यापार भी ज़ोरों से चल रहा था।

माधव सदा इस बात पर सावधान रहता था कि उससे कोई ग़लती ना हो। वह जान-बूझकर कोई भी बुरा काम करने तैयार नहीं था। पाप से वह डरता था। भगवान के प्रति उसमें अपार श्रद्धा-भक्ति थी। उसका विश्वास था कि पाप करने पर भगवान दंड देंगे। वह चाहता तो घी में मिलावट करके बहुत-सा धन कमा सकता था। अलावा इसके लोगों को उस पर दृढ़ विश्वास था। इस विश्वास की आड़ में वह आसानी से उन्हें धोखा दे सकता था। पर उसने ऐसे बुरे विचारों को अपने पास तक पटकने नहीं दिया। कुछ लोग उसे ललचाने की कोशिश भी करते थे, पर वह किसी प्रकार के प्रलोभन में नहीं आया। इस कारण वह सुखी और शांत जीवन बिता रहा था। अपने से जितना हो सके, दान करता रहता था। इसे उसे आत्म तृप्ति होती थी। उसका कहना था कि दान किसी भी प्रकार का क्यों न हो, पवित्र है, पुण्य है। दान देने की शक्ति रखना भाग्य है।

वहाँ के ज़मींदार को अपने वारिसों और बंधुओं के कारण कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ा। वह मानसिक अशांति का शिकार हो गया। आस्थान के एक ज्योतिषी ने बताया कि नवग्रह शांति होम कराने पर उसकी समस्याओं का अंत हो सकता
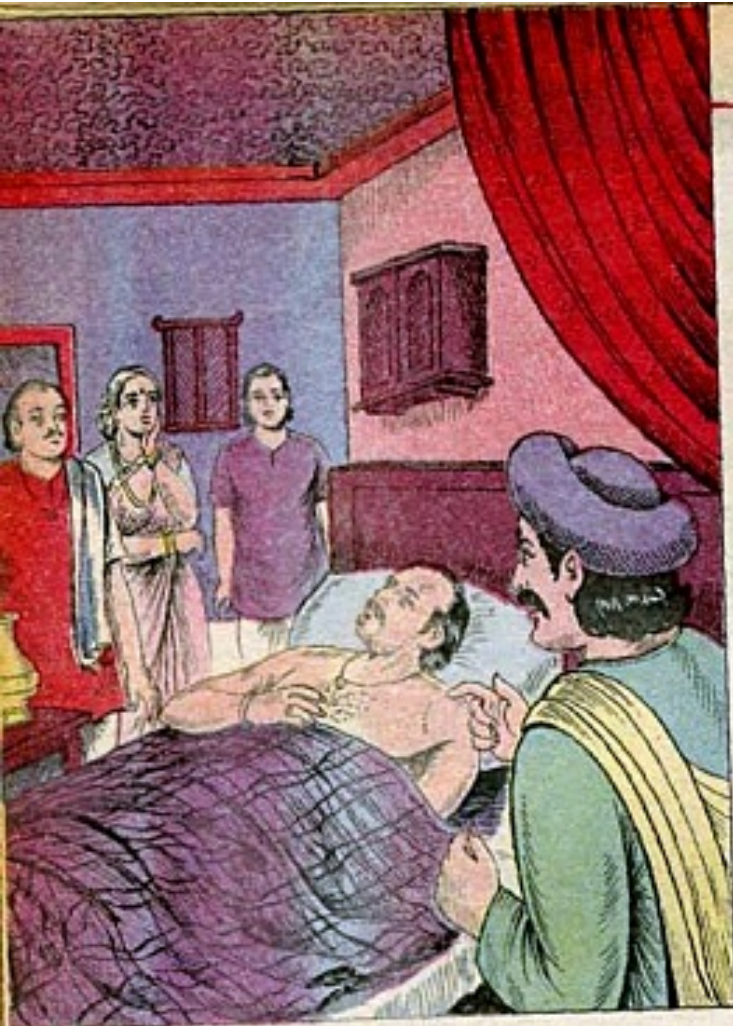
बारे में ज़मींदार की दख़लंदाजी नहीं होगी। तुम जितना दाम बताओगे, देंगे। किन्तु हाँ, घी में मिलावट सख्त मना है। तुम्हारी ईमानदारी के बारे में सुन चुका हूँ। फिर भी पुरोहित होने के नाते तुम्हें सावधान करना मेरा कर्तव्य है।''

पुरोहित के कहे अनुसार दस गागरों का घी भेजने का वादा माधव ने किया। एक तो यह ज़मींदार का काम है और उसपर यह दैव-कार्य भी है, इसलिए इतने बड़े पैमाने पर घी को एकत्रित करने में माधव को नाना प्रकार की यातनाओं से गुज़रना पड़ा। उसे बहुत ही परिश्रम करना पड़ा।

इसी समय पर, ज़मींदार का एक बंधु

है। ज़मींदार होम के प्रबंधों में ज़ोर से लग गया। ज्योतिषी ने सलाह तो दी कि नवग्रह शांति होम कराना होगा, पर इसका पूरा भार आ पड़ा आस्थान के पुरोहित पर। उसे ही यह होम सफलतापूर्वक कराना पड़ेगा। सबसे पहले उसने होम के लिए अति आवश्यक घी के बारे में सोचा। घी गाय का हो, यह आवश्यक था। उसमें मिलावट होनी ही नहीं चाहिये।

आस्थान पुरोहित ने, माधव के बारे में सुन रखा था। उसने उसे बुलाया और पूरा विषय बताने के बाद कहा ''बहुत ही कम समय है। इस होम के लिए तुम्हें दस गागरों का घी भेजना होगा। क़ीमत के

ज़हर से भरे व्रण से पीडित हुआ। वह मधुमेह रोग से पीड़ित था, पर बिना खाये-पिये उससे रहा नहीं गया। नयी व्यायी गाय की पेवसी उसने पी ली। इस कारण उसे ज़हरबाद हुआ। घाव पर नमक छिड़कना जैसे इस व्रण के साथ उसे पीलिया भी हो गया। वैद्य ने रोगी के बंधुओं से कहा, ''जमालगोटे के पत्तों को गाय के दूध में डुबोना और उन्हें गरम करके व्रण पर कसकर बाँध देना। इसके बाद मैं जो दवा दूँगा, उसे घी में मिलाना और दिन में तीन बार रोगी को देते रहना। गाय का घी शुद्ध हो, मिलावट ना हो।''

ज़मींदार का एक रिश्तेदार गाय का घी

के लिए माधव के पास दौड़ा आया।

नवग्रह शांति होम में अब केवल दस दिन बाक़ी हैं। तब तक माधव ने दस गागरों में घी भर दिया। अब ज़मींदार के एक रिश्तेदार को गाय के घी की ज़रूरत पड़ी। वह रिश्तेदार ज़मींदार का बड़ा ही निकट बंधु है। अगर ना कहा जाए तो ज़मींदार की तरफ़ से दबाव भी पड़ सकता है। थोड़ा-बहुत देकर भेजना भी ग़लत होगा।

माधव ने इसपर खूब सोचा-विचारा और दस गागरों में से एक गागर, ज़मींदार के भेजे हुए कर्मचारियों को सौंपा। बाद एक और गागर के घी के लिए माधव कोशिशों में लग गया। यह माधव का दुर्भाग्य कहिये या भगवान की परीक्षा, उसे दसवें गागर भर का घी पूरी कोशिश करने पर भी नहीं मिला। उसे कोई और उपाय नहीं सूझा तो उसने पुरोहित से बात बता दी।

आस्थान के पुरोहित ने सब सुनने के बाद मुस्कुराकर कहा "माधव, तुम्हारी ईमानदारी प्रशंसनीय है। कोई दूसरा होता तो भैंस के दूध से बना घी इसमें मिला देता। भूमि, सोना, तिल, अनाज, नमक, गुड़, वस्त्र, चाँदी के रुपये, गाय ये नौ दान हैं। कहते हैं कि घी को मिलाकर कुल दस दान होते हैं। तुम तो व्यापार कर रहे हो, परंतु दैवकार्य के लिए घी देकर पुण्य कमाया है। मैं ज़रा इस होम के बारे में

भी तुम्हें बता दूँ। असल में इस होम के लिए चाहिये, सिर्फ़ नौ गागरों का घी। मुझे डर था कि नवग्रहों की शांति का होम करते हुए घी का कभी-कभी दुरुपयोग हो सकता है। इसीलिए मैंने दस गागरों का घी मांगा। एक अतिरिक्त गागर की मांग की। यह बात औरों को मालूम ना हो। तुम्हारे पास जो है, वही पर्याप्त है। दसवें गागर का घी, ज़मींदार के रिश्तेदार के रोग-निवारण में काम आ रहा है, यह शायद दैव-निर्णय होगा।"

माधव ने पुरोहित को प्रणाम किया और प्रसन्न होकर घर लौटा। नवग्रह शांति होम भी पूरा हो गया। होम की महिमा थी या

ज़मींदार की होशियारी, जो भी हो, ज़मींदार अपने वारिसों की समस्याओं से मुक्त हो गया। उसका रिश्तेदार भी ठीक हो गया।

होम के पूरे होने के दो दिनों के बाद, दूसरे गाँव से एक आदमी गागर भर का घी ले आया और माधव को दिया। माधव ने उसके सदुपयोग पर भली-भांति सोचा-विचारा। आख़िर वह आस्थान के पुरोहित के पास गया और कहा "महाशय, मुझे शायद ही फिर मौक़ा मिले। आप ही इस घी को दान के रूप में स्वीकार करें।"

भक्ति और श्रद्धा से की गयी माधव की प्रार्थना को पुरोहित इनकार कर ना सका। उसने उस दान को स्वीकार किया।

माधव के इस दान का समाचार लोगों को मालूम हुआ। धीरे-धीरे यह बात ज़मींदार के कानों में भी पड़ी। उसने कुतूहलवश सभा बुलायी, जिसमें पुरोहित और माधव भी उपस्थित थे।

ज़मींदार ने अपने रिश्तेदार को संबोधित करते हुए कहा "पुरोहित ने नवग्रह शांति होम के लिए दस गागरों के घी की मांग पेश की, किन्तु माधव ने नौ गागर मात्र देकर अपना काम चलाया। इससे मैं संतुष्ट हूँ, पर यहीं मुझे एक संदेह हो रहा है। मुझे लगता है कि माधव और पुरोहित ने मिलकर कोई चाल चली है, उन दोनों में साँठ-गाँठ हो गयी है। माधव पहले इसकी क़ैफ़ियत दे।"

माधव ने हाथ जोड़कर ज़मींदार से कहा "मुझे विश्वास है कि कष्टों में भगवान ही उबारता है। पुरोहित के मानने के बाद ही मैंने दसवाँ गागर आपके रिश्तेदार को दिया। अब मैंने जो गागर पुरोहित को दान में दिया, वह होम के बाद मुझे एक गाँववाले ने दिया। मैं नहीं चाहता ता कि उस गागर का घी ऐरे-ग़ैरों को बेचूँ। मैंने चाहा कि आपके आस्थान के पुरोहित को ही दान में दूँ। हो सकता है, यह मेरा अज्ञान हो, पर आपको अपमानित करने का मेरा कोई उद्देश्य नहीं।"

उसकी बातें सुनकर सभा में उपस्थित सब लोग हँस पड़े। ज़मींदार ने उसकी भरपूर प्रशंसा की।

सही जोड़ी

दीक्षित विवाहें करानेवाला एक दलाल था। वह बातूनी था। उसकी बातों में चमत्कार भरा होता था। अपनी बातों से झूठ को भी सच साबित रखने का सामर्थ्य रखता था।

उसी गाँव का निवासी कमल पाँडे अपनी बेटी नीलांबरी की शादी शीघ्र ही कर देना चाहता था। वह पुराणों और शास्त्रों में पंडित था। किन्तु उसकी पुत्री नीलांबरी शिक्षित नहीं हो पायी। क्योंकि शिक्षा में उसकी कोई अभिरुचि नहीं थी। ऊपर से उसकी एक आँख तिरछी थी। फिर भी कमल पाँडे की तीव्र इच्छा थी कि अपनी बेटी की शादी सुँदर और शिक्षित व्यक्ति से करूँ। इसकी जिम्मेदारी उसने दीक्षित को सौंपी।

गाँव में कमल पाँडे के बहुत-से रिश्तेदार थे। उनमें से दूर के कुछ रिश्तेदारों ने अपने लड़के की उसकी लड़की से शादी कराने की इच्छा प्रकट की। वह लड़के की किसी ना किसी कमी पर उँगली उठाता और शादी का प्रस्ताव स्वीकार करने से मना कर देता। वह उन प्रस्तावों का तिरस्कार करता आया।

एक दिन उसकी पत्नी लक्ष्मी ने उससे कहा "मेरी बात आपको बुरी लगेगी ही, पर बिना कहे मुझसे चुप भी रहा नहीं जाता। हमारी बेटी सुँदर नहीं; शिक्षित भी नहीं है। ऐसी लड़की से कौन सुंदर युवक शादी करेगा? मेरे पिताजी के एक दोस्त हैं। उनका बेटा राघव हमारी लड़की से शादी के लिए तैयार है। यह शादी हो जाए तो हमारी समस्या का भी हल हो जाएगा।"

कमल पाँडे अपनी पत्नी की बातों पर नाराज़ हो गया। उसने कहा "उस राघव में ऐसी क्या बात है कि हम अपनी बेटी की शादी उससे कर दें? वह मुन्सिफ़ के दो एकड़ ज़मीन की खेती कर रहा है और जी रहा है। जन्म-पत्री पढ़ना भी उसे नहीं आता। उसकी लंबाई और चौड़ाई

भी तो देखो। ताल के पेड़ की तरफ़ लंबा है। मैं तो किसी भी हालत में इस शादी के लिए तैयार नहीं हूँ।''

लक्ष्मी पति का विरोध करने का साहस नहीं कर सकी। वह चुपचाप घर के पिछवाड़े में चली गयी। दरवाज़े के पीछे खड़ी नीलांबरी माँ-बाप की बातों को चुपचाप सुन रही थी। फिर वह माँ के पीछे-पीछे पिछवाड़े में गयी।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन कमलपाँडे ने देखा कि दीक्षित उसी के घर की तरफ़ खुशी-खुशी आ रहा है। उसे देखकर लगता था कि कोई अच्छा रिश्ता ही पक्का करके आया है। पाँडे ने दीक्षित का सादर स्वागत किया। दीक्षित आसन जमाकर बैठ गया और कहने लगा ''पाँडेजी, शिवपुरी में नीलांबरी के योग्य एक रिश्ता है। इकलौता लड़का है। नाम उसका है, शुक्र। सार्थक नामधेय है।''

''आप तो कह रहे हैं कि सार्थक नामधेय है। पर यह तो बताइये कि एक या दोनों ?'' पाँडे ने पूछा।

''एक क्या ? दोनों। यही नहीं, दिन में शुक्र है तो रात को कुरुनाथ है।'' दीक्षित ने कहा।

''लड़के की शिक्षा और संगीत-ज्ञान के बारे में आपने तो एक भी बात नहीं कही।'' पाँडे ने पूछा।

''अभी बताता हूँ। रामायण, महाभारत को उलट-पुलटकर पढ़ने की योग्यता रखता है। लड़का तो कालिदास के वंश का ठहरा। अब रहा, लड़के का संगीत-ज्ञान। उसका वर्णन करने की शक्ति मुझमें नहीं है। वीणा बजा सकता है, मुरली की तरह। मुरली बजाने पर उसमें से मृदंग की ध्वनि निकलती है।'' दीक्षित ने कहा।

कमल पाँडे मुस्कुराया और बोला ''अब लड़के की शारीरिक दृढ़ता, उसकी लंबाई, चौड़ाई, चुस्ती आदि पर भी प्रकाश डालिये ना।''

''क्या कहूँ। बस, एक उदाहरण मात्र दूँगा। सुनिये। इस उदाहरण से सारी बातें आप ही आप आपको मालूम हो जाएँगी। लड़के के घर के पिछवाड़े में सहिजन का एक पेड़ है। वह

फलों से लदा है। शाखाएँ विस्तरित हैं। ऐसे पेड़ पर वह आसानी से चढ़ जाता है और बंदर की तरह पेड़ के आखिरी भाग तक पहुँचकर फल तोड़ देता है।'' दीक्षित ने अजीब ढंग से उसका वर्णन किया।

''अच्छा, अब बताइये कि उसकी कितनी ज़मीन है?'' पाँडे ने सवाल किया। ''घर के अंदरी भाग से देखने पर दिन में सूर्य दिखायी देगा, रात को चंद्र दीखेगा, नक्षत्र दीखेंगे। मैं क्या बताऊँ कि वह कितनी उन्नत स्थिति में है। आप अपना भाग्य मानिये कि ऐसा भाग्यवान युवक आपका दामाद बननेवाला है।'' दीक्षित ने कहा।

यह सब सुनने के बाद भी कमल पाँडे मौन ही रहा तो दीक्षित ने कहा ''दो-तीन दिनों में क्या ऐसा इंतज़ाम कर दूँ कि वर-वधू एक दूसरे को देख पाएँ और आप भी पूरा विवरण जान जाएँ?''

कमल पाँडे ने हल्की नाराज़ी जताते हुए कहा ''कोई ज़रूरत नहीं। इसी क्षण मैंने निर्णय कर लिया कि मेरी बेटी की शादी राघव से होगी।''

'अच्छा' कहता हुआ दीक्षित वहाँ से चला गया। लक्ष्मी चुपचाप अपने पति को देखती रही। यद्यपि पति के निर्णय पर वह प्रसन्न हुई, फिर भी उसकी समझ में नहीं आया कि वर शुक्र को देखे बिना ही उन्होंने यह रिश्ता क्यों ठुकरा दिया।

कमल पाँडे ने पत्नी के इस संदेह को भाँपा तो कहा ''देखो लक्ष्मी, दीक्षित बड़ा बातूनी

है। अपने वाक्-चातुर्य से मुझे प्रसन्न करने की चाल चली। पर उससे यह हो नहीं पाया। हमारे वार्तालाप का सार यों है।

वर का नाम शुक्र है। कहा कि सार्थक नामधेय है। मतलब इसका यह हुआ कि राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य की तरह एक आँख का है। शुक्राचार्य का दूसरा अशुभ लक्षण है, शराब पीना। उसने कहा कि वर को इसकी भी आदत है। उसने कहा, दिन में शुक्र है तो रात को कुरुनाथ है। मतलब इसका यह हुआ कि रातों में वह बाहर नहीं आता। उसने उसे कुरुनाथ धृतराष्ट्र बताया, क्योंकि धृतराष्ट्र एकदम अंधा था।

शुक्र की पढ़ाई के बारे में जिक्र करते हुए दीक्षित ने कहा कि रामायण-महाभारत को उलट-पुलट कर पढ़ने की शक्ति रखता है। जिसे अक्षर-ज्ञान नहीं, वही तो उलट पलटकर पढ़ेगा।

जिस वाल्मीकी और कालिदास की बात उसने की, वे भी तो पहले अशिक्षित थे, उन्हें अक्षर-ज्ञान नहीं था। इसलिए दीक्षित ने बड़ी होशियारी से शुक्र की तुलना उनसे की।

फिर उसके संगीत-ज्ञान की बात उठाते हुए उसने कहा कि वीणा को मुरली की तरह और मुरली को मृदंग की तरह बजाता है। एक वाद्य को दूसरे वाद्य की तरह कोई भी बजा नहीं सकता। दीक्षित तद्वारा कहना चाहता था कि वर को संगीत का कोई ज्ञान नहीं।

फिर उसने कहा कि घर के अंदर ही से दिन में सूर्य को देखता है तो रात में चाँद और नक्षत्रों को। इसका यह अर्थ हुआ कि घर की छत ही नहीं है। शायद वह झोंपड़ी होगी, जो पत्तों या घास से भी ढकी हुई नहीं होगी।"

कमल पांडे ने दीक्षित की बातों का विवरण दिया और कहा "लक्ष्मी, अब समझ पाया हूँ कि दूर के पहाड़ चिकने होते हैं। राघव ही हमारी पुत्री नीलांबरी के लिए सही होगा। अलावा इसके, तुम कह रही हो कि दोनों को यह शादी पसंद है। अब मुझे कोई एतराज नही है।"

दरवाज़े के पीछे खड़ी नीलांबरी उन बातों को सुनकर शरमा गयी और खुशी से कमरे की तरफ़ भागी।

द्वारका के सब लोग अंतर्द्वीप में महोत्सव देखने गये। इस कारण अर्जुन और सुभद्रा का विवाह निराटंक संपन्न हुआ।

परिचर्याओं में मग्न सुभद्रा से अर्जुन ने कहा "विवाह तो वही है, जहाँ पिता अथवा भाई अग्नि को साक्षी बनाकर कन्यादान करते हों। परंतु ऐसा विवाह होने से हम वंचित रह गये। प्रेयसी-प्रिय होने के नाते हम इस रात को गांधर्व विवाह कर सकते हैं। यह क्षत्रिय धर्म की सीमा में ही है। हम गांधर्व विवाह करें, इसमें तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है ना?" सुभद्रा इस प्रश्न का उत्तर दे नहीं पायी। वह अपने भाई कृष्ण का मन ही मन स्मरण करने लगी। उसकी आँखों में आँसू थे।

लगा कि अर्जुन की इच्छा पूरी नहीं हो पायेगी। उसने इंद्र का स्मरण किया। फलस्वरूप उस रात को इंद्र अपनी पत्नियाँ शचीदेवी, अरुंधती, नारद, वशिष्ट तथा कुछ देवऋषियों व अप्सराओं को अपने साथ लेकर अर्जुन के यहाँ पहुँचा।

उसी मुहूर्त पर कृष्ण भी अक्रूर, सात्यकी, गद आदि को लेकर वहाँ पहुँचा। देवकीदेवी और रुक्मिणी भी उसके साथ आयीं। उस समय अंतर्द्वीप में बलराम गाढ़ी निद्रा में था।

इंद्र ने कृष्ण से कुशल-मंगल पूछा और औपचारिक रूप से पूछा "मेरे पुत्र अर्जुन का विवाह तुम्हारी बहन सुभद्रा से हो।"

यादवों ने मुक्तकंठ से कहा "इससे बढ़कर हमें और क्या चाहिये।" कृष्ण ने भी अपनी सम्मति दी।

इंद्र ने अर्जुन से मंगल स्नान करवाया। दिव्य पुष्प-मालाओं, वस्त्रों तथा आभरणों से सुसज्जित करवाकर अर्जुन को विवाह मंडप ले आया।

इस बीच अरुंधती, शची, देवकी, रुक्मिणी ने भी सुभद्रा का स्नान करवाया और अमूल्य आभरणों से उसे सजाकर अर्जुन के बगल में बिठाया। दिग्पालकों के समक्ष, नारद व वशिष्ट आदि ऋषियों की उपस्थिति में उनका विवाह शास्त्रोक्त संपन्न हुआ। फिर देवता अपने लोक में चले गये। यादव जब अंतर्द्वीप लौटने निकले, तब कृष्ण ने अर्जुन से कहा "अर्जुन, तुम यहाँ और बीस दिन रहो। तदनंतर सुभद्रा को लेकर रथ में इंद्रप्रस्थ जाओ।" उसने वह रथ भी उसे दिखाया, जिसमें सैन्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, सलाहाका नामक चार घोड़े बंधे हुए थे।

कृष्ण के कहे अनुसार ही अर्जुन बीस दिन द्वारका में रहा। उसने सुभद्रा से कहा "मेरा चातुर्मास्य पूर्ण हुआ। ब्राह्मणों की समाराधना करूँगा। आवश्यक प्रबंध कराना।"

समाराधना भी सफलतापूर्वक संपन्न हुई। तब उसने सुभद्रा से कहा कि रथ की तैयारी हो। फिर रथ में सुभद्रा और उसकी परिचारिकाओं को लेकर अतिवेग से इंद्रप्रस्थ की ओर प्रस्थान करने लगा।

यादवों ने यह देखा। उन्होंने सोचा "यह क्या हो रहा है। यह तो सुभद्रा का अपहरण करके जा रहा है" उन्होंने उसे रोका और उसपर बाणों की बौछार करने लगे। अर्जुन ने उन्हें हराया और अपने को बचाते हुए रथ को रैवताकाद्रि के उस पार ले गया।

यह समाचार अंतर्द्वीप में मालूम हुआ। स्पष्ट हो गया कि अर्जुन ही सुभद्रा का अपहरण करके ले जा रहा है। वहाँ उपस्थित यादवों ने निर्णय किया कि सेना
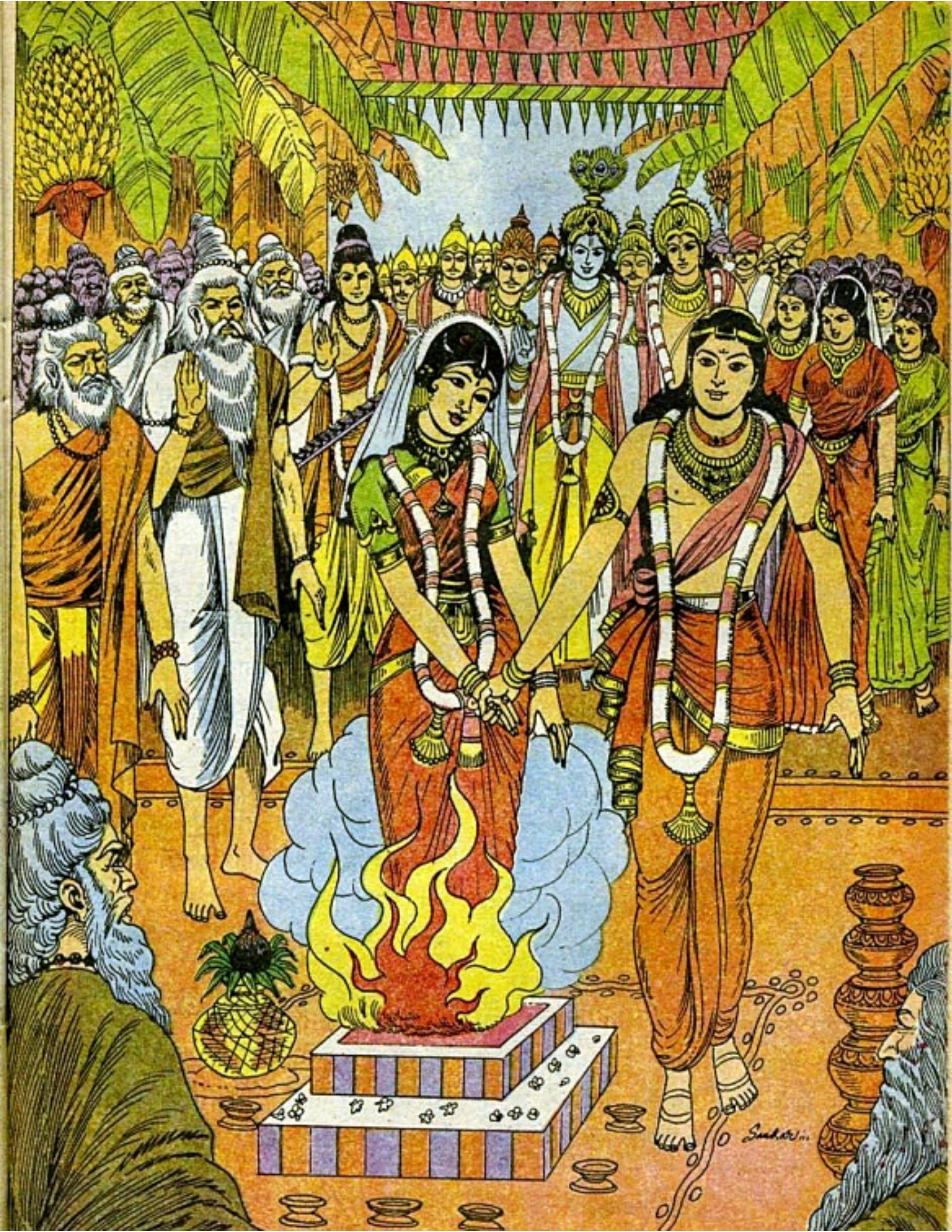
को भेजकर अर्जुन को हरायेंगे और सुभद्रा को वापस ले आयेंगे ।

बलराम ने उन्हें टोका और कृष्ण से कहा "देखा, अर्जुन ने कितना द्रोह किया ? तुम मौन क्यों हो ? ऐसे अपमान से मृत्यु ही कहीं अच्छी है । बस, तुम 'हाँ' कह दो तो अभी जाऊँगा और पूरे कौरव वंश का निर्मूलन कर दूँगा ।" बड़े कडुवे स्वर में उसने कहा ।

कृष्ण ने बलराम से कहा "अर्जुन ने ऐसा क्या अपचार कर दिया ? उससे ऐसा क्या दुष्कर्म हो गया? हम अपनी सुभद्रा के लिए उससे श्रेष्ठ वर कहाँ से ले आ सकते हैं । राक्षस विवाह तो धर्म विरुद्ध नहीं है । क्या आप सब लोग मिलकर उसे युद्ध में पराजित करोगे? यह कदापि संभव नहीं । आप स्वयं सोच लीजिये कि उससे युद्ध करके उसके हाथों हारकर अपमानित होना अच्छा है अथवा उससे अच्छे संबंध जोड कर । द्वितीय पद्धति ही मेरी दृष्टि में श्रेयस्कर है ।"

यादवों को कृष्ण की सलाह सही लगी । अर्जुन सुभद्रा सहित इंद्रप्रस्थ पहुँचा । उसने माता व भाइयों को प्रणाम किया और सुभद्रा को लेकर द्रौपदी के अंतःपुर में गया । द्रौपदी ने उसे देखकर स्त्री सहज ईर्ष्या से कहा "सुभद्रा के साथ द्वारका में ही रहकर मज़े से दिन काट सकते थे । ऐसे तो राजा नूतन स्त्रीयों के प्रेम में सहज ही बंध जाते हैं । अलावा इसके, दृढ़ से दृढ़ बंधन भी पुराने हो जाएँगे तो टूट जाते हैं । प्रेम स्थायी नहीं होता ।" उसके स्वर में ईर्ष्या कूटकूटकर भरी हुई थी । अर्जुन ने उसे समझाया-बुझाया ।

अर्जुन का इशारा पाकर सुभद्रा ने कुन्ती और द्रौपदी को सविनय प्रणाम किया । कुन्ती ने उसे आलिंगन में लिया और सहर्ष आशीर्वाद दिया ।

इंद्रप्रस्थ में सब काम सुचारू रूप से हो रहे थे । कृष्ण बलराम, अक्रूर, उद्धव, सात्यकी, कृतवर्मा, सांब, प्रध्यम्न आदि यादव प्रमुखों को अपने साथ इंद्रप्रस्थ ले

आया। जैसे ही धर्मराज को यह समाचार मालूम हुआ, अपने चारों भाइयों को उसने उनके सुस्वागत के लिए भेजा। यों यादवों का इंद्रप्रस्थ में प्रवेश बडे ही वैभवपूर्वक हुआ।

यादव अपने साथ हज़ारों घोड़ों, हाथियों, रथों, गायों व आभरणों को ले आये। पाँडवों ने उन्हें स्वीकार किया। यादवों को उन्होंने उचित पुरस्कार दिये। उन्हें कुछ दिनों तक अपने विशिष्ट अतिथि बनाकर अपने यहाँ सुखी रखा। कृष्ण को छोड़कर शेष सब यादव द्वारका लौट गये।

कालक्रम में सुभद्रा - अर्जुन का एक पुत्र हुआ। उसका नामकरण हुआ - अभिमन्यु। अभिमन्यु का अर्थ है - निर्भयी व क्रोधी। द्रौपदी के पाँच पुत्र हुए। प्रतिविंध्य, सुतसोम, श्रुतसोम, शतानीक, श्रुतसेन इनके नाम हैं। अर्जुन ने ही इन सब को धनुर्विद्या सिखायी। अभिमन्यु ही अर्जुन के समान का धनुर्धारी कहलाया गया।

कृष्ण जब इंद्रप्रस्थ में था, तब भयंकर गर्मी पड़ी। अरण्य जलने लगे और उनपर से होती हुई गरम हवाएँ चलने लगी। नदियाँ सूख गयीं। पश्चिमी दिशा से चलती लू की वजह से प्राणी बिलखिला गये।

उस ग्रीष्म में अर्जुन ने कृष्ण से कहा ''यह ग्रीष्म दुर्भर है। ऐसे समय पर

अच्छा यही होगा कि यमुना तट के अरण्यों में घर बसाएँ और वहीं आखेट करते रहें।''

कृष्ण को उसका विचार अच्छा लगा। कुछ मित्र और परिवारों को लेकर वे वहाँ बस गये। वहाँ सुख से रहने लगे। एक दिन उन सब ने खांडव वन के समीप ही के चंदन के पेड़ों के नीचे बैठकर और कुँजों मे आसीन होकर भोजन किया। कृष्णार्जुन के साथ-साथ द्रौपदी व सुभद्रा भी थीं। सबने अपने शरीरों पर चंदन पोता और पुष्पमालाएँ अपने कंठों में डाल लीं। परस्पर वार्तालाप में संलग्न थे।

उस समय एक वृद्ध ब्राह्मण उनके पास

आया। वह बहुत ही लंबा था। उसका शरीर कांतियुक्त था। सूत के कपड़े पहना हुआ था। जटाएँ लटक रही थीं। उसकी मूँछें गोरोचन रंग में थीं। उसने उनसे कहा "महाशय, मैं भोजन-प्रिय हूँ। आप खाना खिलायें तो खाऊँगा।"

उसकी बात सुनकर कृष्णार्जुन ने कहा "ब्राह्मण, बोलो, तुम्हें कैसा भोजन चाहिये ?"

"मैं अग्निहोत्री हूँ। मुझे कोई अलग भोजन नहीं चाहिये। मैं इस खांडव वन को खा जाना चाहता हूँ। कितनी ही बार मैंने प्रयत्न किया। किन्तु इंद्र ने मूसलधार वर्षा बरसायी और मेरे प्रयत्नों को विफल कर दिया, विघ्न डालता रहा। तक्षक जैसे सर्पों की सहायता लेकर वह इस वन की रक्षा करता रहा। आप जैसे महानों की सहायता पाकर ही इस कार्य में मैं सफल हो सकता हूँ। आप मेरी सहायता कीजिये।"

अग्निहोत्री ने खांडव वन का दहन करना चाहा, इसका एक प्रबल कारण है।

पूर्व श्वेतकी नामक एक राजा था। वह लगातार यज्ञ करता रहा। एक बार उसने दीर्घ याग किया। इससे, जो ब्राह्मण श्वेतकी को याग में सहयोग दे रहे थे, उनकी आँखें धुएँ के कारण ख़राब हो गयीं। श्वेतकी ने उनके स्थान पर दूसरे ब्राह्मणों को बुलाया और यज्ञ पूरा किया।

किन्तु, श्वेतकी ने जब एक और बार याग करना चाहा तो सब ब्राह्मणों ने आने से मना कर दिया। राजा ने गिड़गिड़ाया तो उन्होंने स्पष्ट कह दिया "तुम्हारे यागों के ऋत्विक केवल शिव ही बन सकते हैं। उन्हीं से यह साध्य होगा।"

श्वेतकी कैलास गया और तपस्या की। शिव प्रत्यक्ष हुए। श्वेतकी ने शिव से प्रार्थना की कि आप ही मेरे याग के ऋत्विक बनें।

"ऋत्विक तो ब्राह्मण ही हो सकते हैं। फिर भी, लगातार बारह वर्षों तक

अग्नि से प्रार्थना करोगे तो यह संभव होगा'' शिव ने कहा।

शिव के कहे अनुसार श्वेतकी ने अग्नि से प्रार्थनाएँ कीं। अग्नि को घी की आहुति देता रहा। फिर शिव के पास आया।

शिव ने श्वेतकी से कहा ''मैंने तो तुमसे पहले ही बताया था कि ब्राह्मण ही ऋत्विक बन सकता है। मैं इस कार्य के योग्य नहीं हूँ। किन्तु मेरी तरफ़ से दुर्वास ऋत्विक बनकर आयेगा। यज्ञ के लिए आवश्यक प्रबंध करो।''

श्वेतकी ने सारे प्रबंध किये। शिव ने दुर्वास को भेजा। दुर्वास ने यज्ञ किया और दक्षिणा लेकर चला गया।

फिर बात यों हुई। अग्नि का पेट घी से लबालब भर गया। अजीर्ण रोग का वह शिकार बना। उसकी तेजस्विता घट गयी। वह ब्रह्मा के पास गया और उनसे पूछा कि इस अजीर्ण रोग से बचने का क्या उपाय है?

ब्रह्मा अग्नि को देखकर हँस पड़े और बोले ''असीम घी पीकर अजीर्ण रोग से पीड़ित हो रहे हो। खांडव वन का दहन करोगे तो तुम ठीक हो जाओगे, तुम्हारी तेजस्विता लौटेगी। खांडव वन में अनेकों प्रकार के प्राणी, दिव्य औषधियाँ, बनस्पतियाँ व महावृक्ष हैं। इन सबको खा जाने पर तुम्हारा रोग दूर हो जायेगा।

ब्रह्मा का बताया मार्ग पाकर अग्नि ने खांडव वन में प्रवेश किया। उसके दहन का कार्य प्रारंभ कर दिया। किन्तु तक्षण ही मूसलधार वर्षा होने लगी। उस वन के निवासी हाथी, सर्प आदि भी अपने मुँहों में पानी भर-भरकर ले आये और अग्नि पर बरसाया। उसका यत्न विफल हुआ।

अग्नि ने खांडव वन को जला डालने का प्रयत्न सात बार किया। उसके सातों यत्न विफल हुए। अग्नि पुनः ब्रह्मा के पास गया। उसने अपनी अशक्तता जतायी। और बताया कि अब भी मैं अजीर्ण रोग से पीड़ित हूँ।

-सशेष

बालक - समाचार

पाठ्य-पुस्तक में जगह

यह तो सहज ही है कि महापुरुषों से संबंधित विशेषताएँ पाठ्य-ग्रंथों के अंश होते हैं। ये विशेषताएँ बालक-बालिकाओं को मार्ग दिखाती हैं और महापुरुषों से सूचित मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। मलयालम भाषा-भाषी चि. राजेश ग्यारह साल का बालक है। वह मद्रास की एक पाठशाला में शिक्षा पा रहा है। छठवें दर्जे में पढ़ रहा है। इस बालक की ख़ासियतें, उसके चित्र के साथ मलयालम पाठ्य ग्रंथ में प्रकाशित हुई हैं। पिछले साल कनाडा के लीय ब्रिड्ज में कराटे चाम्पियनषिप की स्पर्धाएँ हुईं। पंद्रह सालों से कम उम्र के बालकों ने इसमें भाग लिया। इस स्पर्धा में चि. राजेश ने स्वर्ण पदक पाया। १९९३ में जमशेदपुर में संपन्न नेशनल चांपियनषिप स्पर्धाओं में, तथा १९९५ में जबलपुर में हुई स्पर्धाओं में भी उसने स्वर्णपदक पाया। पाठशाला में भर्ती होने के पहले ही इसने कराटे सीखी। आठ सालों में ही इसने ब्लाक बेल्ट पाया। पाठशाला में भर्ती होने के बाद भी हर दिन चार घंटों तक कराटे का अभ्यास करता था, जिससे उसकी पढ़ाई भी ज़ारी रहे। राजेश, जब कनाडा से लौटा, तब राज्य के मुख्य-मंत्री ने स्वयं उसका स्वागत किया और पूछा कि कहो, तुम्हें क्या चाहिये? उसने जवाब में कहा कि कराटे के अभ्यास के लिए उसे छोटी-सी जगह दी जाए। राजेश को बीस सेंट की भूमि देने का वादा मुख्य मंत्री ने किया।

चित्रकार और अभिनेता

केरल का के. डेविड बारह साल का विद्यार्थी है। सिफ़ारिश हुई है कि उसका नाम 'गिन्नीस बुक आफ़ रिकार्ड्स' में दर्ज हो। अब तक उसने ३५,००० हज़ार चित्रों का चित्रांकन किया और रिकार्ड स्थापित किया। वह बचपन में पेन्सिल से चित्र खींचता रहता था। पेन्सिल क़लम बनी। कलम ब्रेश बनी। चित्र खींचने के लिए वह पानी के रंग तथा तेल के रंगों को भी उपयोग में लाता है। कम्प्यूटर की सहायता लेकर भी उसने कई चित्रों को रूप दिया। जब उसने इश्तहार देखा कि चित्रपटों में अभिनय करने छोटे बालक चाहिये तो उसने आवेदन-पत्र भेजा, जिसमें वह चुना गया। अभिनेता डेविड का एक मलयालम चित्र अब थियेटरों में चल रहा है।

बहुमुखी प्रतिभावान

'सेंटर स्टेज' बंगलोर की एक संस्था है। उसने एन.आरावमुदन नामक मद्रास के एक विद्यार्थी की बहुमुखी प्रतिभा की सराहना की और उसे 'इस वर्ष का बालक' कहकर सम्मानित किया। यह बालक ग्यारहवें दर्जे में है। वह भविष्य में खूब पढ़ पाये, इसके लिए यह संस्था उसे लाख रुपये देगी। पढ़ाई के साथ-साथ लेख-रचना, पहेली, चित्रलेखन, मृदंग वादन आदि क्षेत्रों में भी आरावमुदन सर्वप्रथम आया। उसी की पाठशाला में पढ़ता हुआ कौशिक जयरामन भी 'इस वर्ष का वर्धमान विद्यार्थी' घोषित हुआ और दस हज़ार रुपयों के पुरस्कार का हक़दार बना।

पांग्री

यद्यपि पांग्री पेड़ देश भर में व्याप्त हैं, किन्तु ये बिहार, बंगाल तथा समुद्री तट के अरण्य प्रांतों में अधिकतर दिखायी देते हैं। वृक्ष-शास्त्र में इसे 'एरित्रीना इंडिका' कहते हैं। यह शब्द सूचित करता है कि यह उन लाल पूलों का पेड़ है, जो भारत में पाया जाता है। इसके फूल लाल रंग के हैं। ये लंबे होते हैं। बंद रहते हैं। बड़े पत्ते में तीन उपदल होते हैं। कुछ प्रॉंतों में विश्वास किया जाता है कि ये तीनों उपदल ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर के रूप हैं। हमारे देश के कुछ ईसाई इन्हें पिता, पुत्र, तथा परिशुद्ध आत्मा याने ईसा मानते हैं। पत्तों की डंडियों के पास ये एक दूसरे के सामने होते हैं।

पत्तों से घिरा हुआ यह पेड़ पंद्रह मीटरों की ऊँचाई तक बढ़ता है। उद्यानवनों में तथा सड़क के दोनों ओर अलंकार वृक्षों के रूप में तथा छाया के लिए इन्हें पनपाते हैं। इस पेड़ की जड़ें भूमि को उपजाऊ बनाती हैं। इसलिए चाय के बागों के बीच कहीं-कहीं इसे पनपाते हैं। टहनियों में छोटे-छोटे कॉंटों के होने के कारण इसकी छाल खुरदुरी होती है। पेड़ के पक्के हो जाने के बाद कॉंटे झड़ जाते हैं।

फरवरी, मार्च में पत्तों के झड़ते समय पत्ते उभर आते हैं। इसके बाद पत्तों के कोंपले उग आते हैं।

हिन्दी में इसे 'पांग्री', मराठी में 'पंगारा' बंगाली में 'रक्तमदार' मलयालम में 'मंदार' तमिल में 'मरुका' 'मुलमुरंगा' तथा तेलुगु में 'बाडिता' कहते हैं।

हमारे देश के ऋषि : १०

कपिल

सूर्यवंशज नगर महाराज ने अश्वमेध याग करना चाहा। समस्त सुलक्षणों से सुसज्जित एक अश्व को अलंकृत किया और जैत्रयात्रा पर छोड़ दिया। अश्व के पीछे-पीछे साठ हज़ार नगर के राजकुमार भी गये।

अश्व विविध देशों में घूमा। किन्तु कोई भी उसे रोक नहीं पाया। पर एक दिन अकस्मात अश्व दिखायी नहीं पड़ा। उन्होंने बहुत ढूँढा, लेकिन वह कहीं दिखायी नहीं पड़ा। जब उन्हें लगा कि उसे ढूँढ निकाल पाना उनके बस की बात नहीं है तो उन्होंने अपने पिता को इसकी ख़बर दी। नगर महाराज ने कहा "यागाश्व भूलोक में कहीं भी दिखायी नहीं दे रहा है तो हो सकता है, वह पाताल लोक में हो। भूमि खोदो और पाताल जाओ।"

नगर के पुत्र चारों दिशाओं में भूमि को खोदने लगे। आख़िर वे पाताल पहुँचे। वहाँ दिव्य तेजस्वी एक मुनि तपस्या में मग्न थे। उनके बग़ल में ही अश्व बंधा हुआ था। इस दृश्य को देखते ही राजकुमार आपे से बाहर हो गये और मुनि को गालियाँ देने लगे। दूषित शब्दों से संबोधित करने लगे। उन्हें क़ैद करने का प्रयत्न किया। तपोभंग से मुनि ने अपनी आँखें खोलीं। उसी क्षण राजकुमार भस्म हो गये और राख बन गये। राजकुमारों को ज्ञात नहीं था कि इंद्र ने अश्व का अपहरण किया और यहाँ लाकर बाँध दिया।

नगर महाराज के पोते भगीरथ ने अंकुठित दीक्षा से तपस्या की और गंगा को भूमि पर ले आया। वह उसे पाताल ले गया और उस पवित्र जल को उस राख पर प्रवाहित करके अपने दादाओं को बचा लिया।

अपनी एकमात्र दृष्टि फैलाकर राजकुमारों को भस्म करनेवाले थे मुनिपुंगव कपिल। वे उत्तम विष्णु भक्त थे। कर्दम के प्रजापति थे। देवहुतों के पुत्र थे। पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने अपनी माता को ज्ञानोपदेश दिया। उन्हें मुक्ति दिलायी। हमारे षड्दर्शनों में एक, सांख्य दर्शनशास्त्र के मूल पुरुष थे कपिल मुनि।

क्या तुम जानते हो ?

१. नाजिज के स्थापक कौन हैं ?
२. हिन्दु पुराणों के अनुसार प्रथम मृत मानव कौन है?
३. पीतल कैसे तैयार किया जाता है?
४. 'दंत मंदिर' कहाँ है?
५. तेरह द्वीपों पर निर्मित नगर कौन-सा है?
६. मकड़ी की कितनी आँखें होती हैं?
७. बंगला देश में कौन-सी फसल अधिकाधिक होती है?
८. आस्ट्रेलिया का कौन-सा वह राज्य है, जो द्वीप है?
९. 'दि कर्नल' के नाम से भारत के कौन-से क्रिकेट खिलाड़ी पुकारे जाते थे?
१०. अंकारा के पूर्व टर्की की राजधानी का क्या नाम था?
११. हमारे राष्ट्रीय झंडे में जो अशोक चक्र है, उसमें कितने डंडे हैं?
१२. ग्रीन करेन्सी का क्या नाम है?
१३. फतेहपूरसिकरी का निर्माता कौन है?
१४. सूयज नहर कब खोली गयी?
१५. भारत की तरफ़ से खेलकर एक ही दिन में 'सेंचरी' मारनेवाले प्रथम भातीय कलाकार कौन हैं?
१६. टेलिविज़न के आविष्कारक कौन हैं ?
१७. तात्कालिक प्रधान मंत्री का दायित्व किन्होने दो बार संभाला? कब?
१८. 'सुमो' नामक कुश्तियाँ किस देश से संबंधित हैं?
१९. ''हार्स पवर'' नामक शब्द का उपयोग पहले पहल किन्होने किया?
२०. सबसे बड़ा द्वीप कौन-सा है ?

उत्तर

१. हिटलर
२. यम
३. तांबे और जस्ते के मिश्रण से
४. श्रीलंका के कांडी में बुद्ध दंत सुरक्षित रखा गया।
५. स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम
६. आठ
७. पलसत
८. टास्मानिया
९. दिलीप वेंगसारकर, सी.के. नायुडु भारतीय सेना में कर्नल थे।
१०. इस्तानबुल
११. चौबीस
१२. दाक्मा
१३. बादशाह अकबर
१४. १८६९ में
१५. कपिलदेव (१९८३)
१६. जान लागी बाईड
१७. गुलजारीलाल नंदा (१९६४, १९६६)
१८. जापान
१९. जेम्स वाट
२०. ग्रीनलांड

काव्य-रसिक

रामशर्मा नामक कवि सहृदयों को कविताएँ सुनाता था और वे जो देते थे, लेकर तृप्त होता था। उसे धन का कोई व्यामोह नहीं था।

रामशर्मा को एक बार मालूम हुआ कि नगर में सत्यवादी नामक एक व्यापारी है, जिसे कविताएँ सुनने का बड़ा चाव है। उससे मिलने निकला और रास्ते में थकावट की वजह से एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

थोड़ी देर बाद वहाँ एक ग़रीब आया। खेत में काम करके थक गया था, इसलिए आराम करने वह वहाँ आया। रामशर्मा को देखते ही उसके मुँह से निकल पड़ा "महाशय, आपके मुखमंडल पर तेजस्विता व्याप्त है। कहीं आप कवि तो नहीं?"

रामशर्मा ने 'हाँ' कहा। ग़रीब ने तुरंत कहा "महाशय, पढ़ा-लिखा तो नहीं हूँ, पर कविता समझने का सामर्थ्य रखता हूँ। मेरे जीवन को लेकर आप कोई कविता सुनाएँगे तो सुनने की बड़ी आशा है।"

रामशर्मा ने उसी के मुँह से उसकी कहानी सुनी। उसके माँ-बाप बूढ़े हैं। पत्नी अच्छी और गुणवती है। दो साल का एक बेटा भी है। खेत में काम करने पर एक दिन के लिए दस रुपये मिलते हैं। उससे अपनी ज़रूरतें पूरी करता है। फ़ुरसत के समय पत्नी मिठाइयाँ बनाती है और बेचती है। इसलिए आराम से दिन गुज़र रहे हैं। पर, कविता सुनने में उसे बड़ी दिलचस्पी है और इसी से उसे सुख मिलता है।

उसकी कहानी सुनने पर रामशर्मा में भावावेश उमड़ पड़ा। उसने उस ग़रीब को लेकर दस कविताएँ रचीं। उन्हें सुनते हुए ग़रीब की आँखें आनंद से ड़बड़बा गयीं। अपने आँसुओं को पोंछते हुए उसने कहा "महोदय, आपके कहने पर ही मैं जान पाया कि मेरी

मनोहर अग्रवाल

कहानी इतनी अच्छी है। कहते हुए उसने शर्मा को दस रुपये देने के लिए हाथ बढ़ाया। रामशर्मा सकुचाता हुआ बोला "तुम्हें मेरी कविताएँ अच्छी लगीं, यही मेरे लिए बहुत है। मुझे यह धन मत देना। तुम्हें इनकी ज़रूरत है।"

ग़रीब ने हँसकर कहा "मुझपर कविता सुनाने के लिए आपने कोई संकोच नहीं किया। इससे मैं बहुत खुश हूँ। पर, आप भी मुझसे धन लेने में संकोच मत कीजिये। अगर आपने स्वीकार नहीं किया तो इसे मैं अपना अपमान समझूँगा।"

रामशर्मा ने रुपये ले लिये। ग़रीब के काम पर जाने का समय हो गया। रामशर्मा से बिदा लेकर वह चला गया। रामशर्मा वहाँ से निकलकर नगर की ओर जब जाने लगा तो राजपरिवार के एक सदस्य ने उसे देखा। उस समय वह गाड़ी में बैठा जा रहा था। उसने गाड़ी रोक दी और जब उसे मालूम हुआ कि वह एक कवि है, तो बहुत खुश हुआ। उसने उसे गाड़ी में बैठने के लिए कहा।

राजपरिवार के उस सदस्य को भी कविता सुनने का बड़ा शौक़ था। उसने भी रामशर्मा से कहा कि मुझपर एक कविता सुनावो। रामशर्मा ने उससे उसकी कहानी पूछी।

राजपरिवार के उस सदस्य का नाम था श्रवण। राजा का अत्यंत प्रीति-पात्र था। राजा ने उसे देश भर भ्रमण करके यह जानने भेजा कि कहाँ-कहाँ अति सुँदर प्रदेश हैं। इसके लिए उसे हर मास पाँच हज़ार रुपये

दिये जाते हैं। चूंकि श्रवण अधिकतर ऐसे कामों पर जाया करता था, इसलिए वह अपनी प्रिय पत्नी से दूर रहता आ रहा था।

उसकी कहानी सुनते ही रामशर्मा में कविता का आवेश उभर आया। उसने श्रवण की पत्नी की विरह-वेदना पर मधुर कविता रची और उसे सुनाया। उसे सुनते हुए श्रवण को लगा मानों वह अपने ही घर में हो।

थोड़ी ही देर में गाड़ी नगर में पहुँची। श्रवण ने, रामशर्मा को पाँच-सौ रुपये दिये और कहा "कविवर, यह आपकी कविताओं की क़ीमत नहीं है। मेरी शक्ति का मापदंड है। इसे स्वीकार कीजिये।"

रामशर्मा ने वह धन लिया और पता पूछते हुए सत्यवादी के घर आया। वह घर इंद्रभवन की तरह दिव्य था। उसने घर में क़दम रखा। सत्यवादी की पत्नी रुक्मिणी उसके पास आती हुई बोली "आपके मुखमंडल पर दिव्य तेजस्विता व्याप्त है। क्या आप कवींद्र है?"

रामशर्मा ने 'हाँ' के भाव में अपना सर हिलाया। रुक्मिणी ने अपने पति के बारे में बहुत कुछ बताया। वह व्यापारी है। घर से सबेरे निकले तो रात को ही वापस आ पाता है। वह बड़ा ही भाग्यशाली है। जो भी व्यापार करे, सफल होता है। जो भी छूता है, सोना बन जाता है। असफलता उससे डरकर कोसों दूर भागती है। हर दिन की आमदनी कम से कम दस हज़ार रुपयों की होती है। किसी-किसी दिन तो पचास हजार रुपये भी कमा लेता है।

सत्यवादी को कविताओं का इस हद तक पागलपन था कि कविता सुनने किसी भी मुख्य कार्य को भी छोड़कर चला आता था। रुक्मिणी को जब मालूम हुआ कि रामशर्मा कवि है, तो उसने नौकरों को अपने पति को ले आने के लिए नगर के चारों ओर दौड़ाया। उसने स्वयं रामशर्मा का स्वागत-सत्कार किया।

उस घर को और उस घर के वातावरण को देखते हुए रामशर्मा को लगा कि असमय पर आया हूँ। उसने रुक्मिणी से कहा "मैं तो

बाद भी आ सकता था। नौकरों को दौड़ाने की क्या ज़रूरत थी।''

रुक्मिणी ने कहा ''आप जैसे कवियों के आने पर ही वे घर आते हैं और रहते हैं। आप जैसों के आने पर हमारा घर पवित्र हो जाता है। हमें पर्व दिन-सा लगता है।''

थोड़ी ही देर में सत्यवादी भागता हुआ आया। दुपहर का समय था, इसलिए रुक्मिणी ने सबको ठंडा पिलाया।

सत्यवादी ने रामशर्मा से कहा ''नयी कविताएँ सुनाइये या अपने काव्य का पठन कीजिये। जैसी आपकी मर्ज़ी।''

रामशर्मा बैठ गया और अपने काव्य की एक-एक पंक्ति मधुर स्वर में सुनाने लगा। तन्मय होकर सत्यवादी सुनने लगा। फिर एक-एक करके घर के सब लोग वहाँ आकर बैठ गये। नौकर-चाकर भी आ गये। सब बड़ी श्रद्धा से कविता सुन रहे थे। बीच में, रुक्मिणी ने कुछ नौकरों को भेजा और मिठाइयाँ व शरबत मंगायीं।

काव्य-पठन अंधेरा हो जाने के बाद भी कुछ समय तक चलता रहा। समाप्त होते ही भोजन करते हुए काव्य को लेकर चर्चाएँ करते रहे। सत्यवादी ने काव्य को लेकर अपने कुछ संदेह व्यक्त किये। रामशर्मा ने बड़ी ही होशियारी से उन संदेहों को निवृत्त किया।

सत्यवादी ने, रामशर्मा को एक हज़ार, एक रुपये दिये और कहा ''कविता का मूल्य कौन आँक सकते हैं?''

रुक्मिणी ने कहा ''यह पुरस्कार आपके

काव्य-पठन के लिए नहीं, बल्कि मेरे पति को घर पर आपने इतने घंटों जो बिठाया, उसके लिए।"

रात को वहीं रामशर्मा के ठहरने का प्रबंध हुआ। सत्यवादी ने उससे कहा "आप आराम कीजिये। कल सबेरे आराम से जा सकते हैं। कल आपके उठते-उठते मैं शायद बाहर चला जाऊँगा।" कहकर उसने बिदा ली।

दूसरे दिन रामशर्मा के जागने के पहले ही सत्यवादी बाहर चला गया। सबसे बिदा लेकर वह अपने गाँव लौटा। उसने सब बातें अपनी पत्नी को सुनायीं। सत्यवादी की वह भरपूर प्रशंसा करने लगा।

तब रामशर्मा की पत्नी ने कहा "शायद आप इस बात पर खुश हैं कि सत्यवादी ने भारी रक़म दी। उसकी आमदनी को देखते हुए क्या वह कोई बड़ी रक़म है ? श्रवण ने तो, अपनी आमदनी का एक हिस्सा दिया। ग़रीब मजदूर ने अपनी पूरी आमदनी ही आपको दे दी। सच कहा जाए तो आपको चाहिये कि आप उस मजदूर की दाद दें।"

रामशर्मा ज़ोर से हँसता हुआ बोला "बुद्धू कहीं की, पुरखो की दी हुई संपत्ति, बैठकर भी आराम से खाते रहें तो चार पुश्तों तक खा-पी सकते हैं। मुझे धन का कोई मोह नहीं। मनुष्यों के मूल्य की तुलना धन से करने की मेरी आदत भी नहीं है। मजदूर ने फ़ुरसत के समय मेरी कविता सुनी। श्रवण ने यात्रा में मेरी कविता सुनी। सत्यवादी अकेला ही एक व्यक्ति था, जिसने अपने काम को भुला दिया और मेरी कविता श्रद्धा से सुनी। वह समय तो उसके लिए बहुत ही मूल्यवान है, क्योंकि इतने समय में वह हज़ारों रुपये कमा सकता था। कमाई के बदले उसे नष्ट पहुँचा। मैं तो समय का मूल्य आँक रहा हूँ, ना कि उनके धन का। इस दृष्टि से देखा जाए तो सत्यवादी जैसा कौन है, कौन होगा ?"

तब जाकर रामशर्मा की पत्नी को मालूम हुआ कि कवि-हृदय काव्य-रसिक को कितना मानता है।
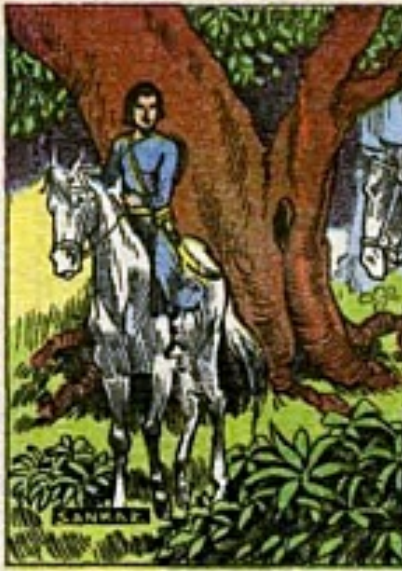
ग़रीब दुल्हा

सुदूर देश में एक छोटा राजा था। वह कोई बड़ा धनी नहीं था। गुणवती नामक उसकी एक सुंदर बेटी थी। राजा की आर्थिक स्थिति इतनी सुस्थिर नहीं थी कि पुत्री का स्वयं विवाह कराये, इसलिए उसने स्वयंवर की घोषणा की। स्वयंवर में जो भी भाग लेंगे, वे अपनी शक्ति व ओहदे के अनुसार भेंटें देंगे। उनमें से गुणवती जिसे चाहेगी, उससे शादी करेगी।

गुणवती के विवाह के अवसर पर जितने आये थे, उनमें से भद्र एक था। वह अपने साथ मूल्यवान भेंटें भी ले आया था। उसके पिता का नाम था दुर्जय। वह बड़ा ही क्रूर व अत्याचारी था। अपनी दुष्टता से उसने कितने ही राजाओं को अशांत किया। उसके अत्याचारों से पीडित दस राजाओं ने एक बैठक बुलायी और निश्चय किया कि उसपर आक्रमण किया जाए। वे जब उक्त बैठक से लौट रहे थे, तब दुर्जय ने उन दस राजाओं में से पाँच राजाओं को बंदी बना लिया। उनसे बहुत-सा धन और सोना छीना। फिर उन्हें मुक्त कर दिया।

गुणवती के स्वयंवर पर जब भद्र राजद्वार पर पहुँचा, तब वीर नामक एक और राजा भी वहाँ आया। वह एक बूढ़े घोड़े पर बैठा हुआ था। उसका कवच छिद्रों से भरा हुआ था। देखने में वह बहुत ही ग़रीब लगता था। जिन पाँच राजाओं को भद्र ने अपना बंदी बनाया, उनमें से वीर का पिता भी एक था। इसी कारण वीर की स्थिति हीन हुई।

भद्र ने, वीर को और उसके बूढ़े घोड़े को देखा। व्यंग्य-भरी मुस्कान भरते हुए उसकी ओर अवहेलना भरी नज़र से देखा। फिर वह आगे बढ़ गया। वीर ने उसे आगे जाने दिया और कहा "राजाओं के आगे-आगे

नौकर ही जाते हैं।" भद्र उसकी बातों से उग्र हुआ। उसने सोचा, मौक़ा पड़ने पर इसे सबक़ सिखाऊँगा।

स्वयंवर का पहला अंश था- राजकुमारों के बल-प्रदर्शन का प्रदर्शन। एक मैदान में उस प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। यह देखने राजकुमारी गुणवती के साथ राजपरिवार के अन्य सदस्य भी आये हुए थे। राजकुमारों में से भद्र नक्षत्रों के मध्य चंद्र की तरह प्रकाशमान दिखायी दे रहा था। सब स्पर्धाओं में वही जीतता जा रहा था। पर वीर भी कोई कम बहादूर नहीं था। द्वंद्व-युद्धों में भद्र ने जितने वीरों को हराया, उनसे भी अधिक वीरों को वीर ने हराया। किन्तु भद्र और वीर में जो द्वंद्व-युद्ध हुआ, उसमें वीर हार गया। ऐसा जो हुआ आश्चर्य की कोई बात नहीं। भद्र के पास कई घोड़े थे। एक-एक से लड़ते समय अलग-अलग घोड़े पर बैठकर उसने युद्ध किया। वीर का घोड़ा बहुत-से युद्धों में भाग ले चुका था, इसलिए वह थका हुआ था। अलावा इसके, वह बूढ़ा भी था। इस कारण वीर हार गया।

सूर्यास्त होते ही सब अतिथि दरबार में आसीन हुए। एक एक करके सबने अपनी-अपनी भेंटे गुणवती की दीं। कितने ही राजकुमार थे, जिन्होंने क़ीमती भेंटे गुणवती को दीं। किन्तु भद्र की दी हुई भेंटों के सम्मुख इनकी कोई गिनती ही नहीं थी। वीर आया अंत में। उसने अपनी तलवार निकाली और गुणवती के सामने रखते हुए कहा "मैं ग़रीब हूँ। यही एकमात्र मूल्यवान भेंट है, जो मेरे पास है।"

भद्र ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा "इस तलवार का ऐसा क्या महत्व है? क्या उसने तुम्हें हारने नहीं दिया?"

वीर ने कहा "हममें दोनों के बीच खड्ग-युद्ध होता तो तुम जानते कि इस तलवार का क्या महत्व है।"

दूसरे दिन सब अतिथि राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर चढ़कर शिकार करने जंगल गये। वीर भी उनके साथ-साथ गया, पर उसने दौड़ाकर अपने घोड़े को कष्ट पहुँचाना

नहीं चाहा । भद्र सबसे आगे-आगे जा रहा था । साथ कुछ और राजकुमार और गुणवती भी जा रहे थे ।थोड़ी दूर जाने के बाद गुणवती में उत्साह घट गया और वह लौटने लगी । तब उसने वीर को देखा ।

गुणवती ने वीर से पूछा "क्या आपको शिकार में कोई दिलचस्पी नहीं?" वीर ने कहा "दिलचस्पी तो है। किन्तु मेरा घोड़ा बूढ़ा है । हमारे वंश की सेवा करते-करते थक गया है । मैं उसे कष्ट पहुँचाना नहीं चाहता ।"

"लगता है कि योग्य घोड़े के अभाव में आप पिछड़ गये । मेरा घोड़ा लीजिये और अपना घोड़ा मुझे दीजिये ।" गुणवती ने प्रस्ताव रखा ।

"मैं अपने घोड़े को बहुत चाहता हूँ । लंबे अर्से से वह हमारी सेवा में लगा हुआ है । मैं इसे किसी को नहीं दूँगा ।" वीर ने दृढ़ स्वर में कहा ।

"कल जब आप अपनी तलवार दे रहे थे तब भी आपने कहा कि मेरी यह तलवार महत्वपूर्ण है । तो क्या कल की आपकी बात झूठी थी?" कहती हुई गुणवती ने अपने घोड़े को दौड़ाया और मुडे बिना चली गयी ।

स्वयंवर का कार्यक्रम समाप्त हुआ । गुणवती अपना निर्णय एक महीने के बाद सुनायेगी । अतिथि लौटने लग गये । वीर को छोड़कर गुणवती ने सबको बिदा किया । उसने वीर की ओर देखा तक नहीं । इसपर

वह बहुत ही दुखी हुआ। नगर छोड़कर जब वह जाने लगा तब रास्ते में उसने एक चरवाहे को देखा।

वीर ने उस चरवाहे से कहा "तुम अब जो दृश्य देखनेवाले हो, उसका पूरा विवरण अपनी राजकुमारी को देना।" वह घोड़े से उतरा। तलवार ली और घोड़े को मार दिया। मरे अपने घोड़े से उसने कहा "गुणवती के लिए मैंने तुम्हारी बलि दी।" फिर वह वहाँ से चला गया।

इस घटना के एक सप्ताह बाद वीर ने देखा कि उसके घर के सामने अच्छी नस्ल का एक घोड़ा बंधा हुआ है। वीर ने समझ लिया कि यह घोड़ा गुणवती का ही भेजा हुआ घोड़ा है। इसपर उसे खुशी भी हुई।

महीना बीत गया। गुणवती के निर्णय को जानने के लिए सब राजकुमार फिर से वहाँ आये। सबका विचार था कि सौ फ़ी सदी वह भद्र को ही अपना पति चुनेगी। परंतु, उसने सबके सामने घोषणा की कि वीर मेरा पति होगा। यह सुनकर सब आश्चर्य में डूब गये। भद्र एकदम नाराज़ हो उठा।

"मैंने वीर की प्रज्ञा अब तक नहीं देखी। विवाह के पहले मैं उसे द्वंद्व-युद्ध के लिए ललकारता हूँ।"

वीर ने कहा "आज शिकार करने जाएँगे। लौटने के बाद आपमें से किसी से भी युद्ध करने तैयार हूँ।"

सब अतिथि शिकार करने गये और दिन भर शिकार करते रहे। शाम को शिकार में मरे जंतुओं के साथ नगर लौटे। भद्र और वीर मात्र नहीं लौटे। गुणवती आप ही आप डरने लगी कि कहीं क्रूर जंतुओं ने उन्हें खा तो नहीं लिया। पर ऐसा नहीं हुआ। शाम होते-होते भद्र मरे और घायल जंतुओं को साथ लिये लौटा। वीर का कहीं पता नहीं। उसकी प्रतीक्षा बहुत देर तक होती रही। फिर सब भोजन करने बैठ गये। तब कहीं जाकर वीर लौटा। उसे देखते हुए स्पष्ट लग रहा था कि वह किसी मृत जंतु को अपने साथ नहीं लाया।

"बड़ी देरी से लौटे हो। मैंने सोचा कि तुम अपने साथ कई जंतुओं का शिकार करके साथ लाओगे। दिखाना तो सही, अपने साथ क्या-क्या जंतु ले आये?" भद्र ने पूछा।

"मैंने अधिक जंतुओं का शिकार नहीं किया। शिकार का मिलना और ना मिलना दैवाधीन है।" वीर ने कहा।

भद्र ने ज़ोर देते हुए कहा "पहले दिखाओ तो सही, तुमने क्या शिकार किया है?"

"लो" कहते हुए उसने अपने दुपट्टे में छिपाये गये एक मानव का कटा सिर बाहर निकाला। उसे भद्र के पाँवों के पास फेंका। वह भद्र के पिता दुर्जय का सिर था।

यह दृश्य देखकर सब अवाक् रह गये। आँखें फाड़-फाड़कर देखते रहे। जब उन्होंने अपने को संभाल लिया तब उनके आनंद की सीमा ना रहीं। दुर्जय ने कितने ही लोगों को हीन स्थिति पर पहुँचा दिया। उन्हें सताया और उनपर अत्याचार किये। वह सबकी आँखों का कांटा था। इतने लंबे अर्से के बाद वीर ने उसका अंत कर दिया। इसलिए उपस्थित सब राजकुमार वीर की वाहवाही करने लगे। उसके प्रति उनमें आदर की भावना घर कर गयी।

भद्र एकदम ठंडा पड़ गया। अपने पिता के बल के बूते पर ही वह अपना दंर्प दिखा रहा था। ऐसे शूर-वीर को मारनेवाले पराक्रमी को देखकर वह भयभीत हो गया। इसलिए वीर को द्वंद्व-युद्ध के लिए आह्वानित करने का साहस उसे नहीं हुआ। उसने कोशिश भी नहीं की कि अपने पिता के हत्यारे से बदला लूँ।

बाद गुणवती और वीर का विवाह हुआ। स्वयंवर पर आये सब राजकुमारों ने उस विवाह में भाग लिया। इसके बाद भद्र ने अपना क़िला छोड़ दिया और इने-गिने साथियों को लेकर कहीं भाग गया। वीर ने उस क़िले को अपने वश में ले लिया। अपने पड़ोसी राजाओं से उसने मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये और पत्नी-समेत राज्य का शासन सुचारू रूप से चलाने लगा।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, मार्च, १९९६ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

S.G. Shesagiri

S.G. Shesagiri

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जनवरी, '९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

नवम्बर, १९९५, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मम्मी दीदी का प्यार मिला**

दूसरा फोटो : **हाथी जैसा अच्छा यार मिला**

प्रेषक : **विनय शर्मा**

C/o. श्री लवकुमार शर्मा, लाम्प्स प्रबंधक, चेतमा सेवा सहकारी समिति, पाली पो. करघोरा ता (म.प्र)

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Hajmola®
CANDY
Jadoo bhara Funtest
1st Prize (एक)
14" कलर टी. वी.
2nd Prize (दो)
वीडियो गेम
3rd Prize (तीन)
स्पोर्ट्स साईकिल
10 Consolation Prizes
वॉकमैन
पहली 500 सही एन्ट्रीज़ के लिए
आकर्षक हाज़मोला कैण्डी कैप्स.
आपकी मनपसंद हाज़मोला कैन्डी अब दो नये... जादू भरे फ्लेवर्स में - नख़रीली कमरख़ और पंगेबाज़ प्लम. इन दो अनोखे फ्लेवर्स का मज़ा लीजिए और हाज़मोला कैन्डी की मज़ेदार प्रतियोगिता के लिए तैयार हो जाइए. टी. वी. पर अपने पसंदीदा कार्यक्रमों के साथ, हाज़मोला कैन्डी का नया चुलबुला विज्ञापन ध्यान से देखिए. और इन आसान से प्रश्नों का उत्तर देकर जीतिए ढेरों शानदार पुरस्कार. और हां, साथ में दिया गया स्लोगन पूरा करना मत भूलिए. अपनी एन्ट्रीज़ साधारण डाक द्वारा इस पते पर भेजिए- हाज़मोला कैन्डी जादू भरा फन्टेस्ट, पी. ओ. बॉक्स न. 7326, नयी दिल्ली - 110065
सही उत्तर पर (✓) लगाइए.
1. विज्ञापन में दिखाए गए नये ग्रह का नाम क्या है ? ☐ पंगेबाज़ ☐ नख़रीली ☐ हाज़मोला कैन्डी
2. स्पेसशिप धरती पर क्या लेकर आता है ?
☐ दो नये फ्लेवर्स ☐ एक नया फ्लेवर ☐ कुछ भी नहीं
3. लड़की की चोटियां कितनी बार ऊपर उठती हैं ? ☐ एक बार ☐ दो बार ☐ तीन बार
4. नये ग्रह का आकार कैसा है ? ☐ गोलाकार ☐ बेलनाकार ☐ आयताकार
नीचे दिए गए स्लोगन को पूरा कीजिए (अधिकतम 10 शब्दों में)
नयी हाज़मोला कैन्डीज़ का है टेस्ट अनोखा क्योंकि... ______
नाम ______ आयु ______
पता ______
Hajmola
Hajmola
टेस्ट नया! जैसे जादू भरा !!
नियम एवं शर्तें : 1. डाबर इन्डिया लि. और एवरेस्ट एडवर्टाइज़िंग प्रा. लि. के कर्मचारी तथा उनके परिवार के सदस्य इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते. 2. डाबर इन्डिया लि. द्वारा नियुक्त निर्णायक मण्डल का फैसला अंतिम एवं मान्य होगा. 3. प्रतियोगिता की अंतिम तिथि 31 जनवरी '96 है. 4. सभी विवाद दिल्ली न्यायक्षेत्र के अधीन होंगे

CHANDAMAMA (Hindi) January 1996 Regd. No. M. 5452